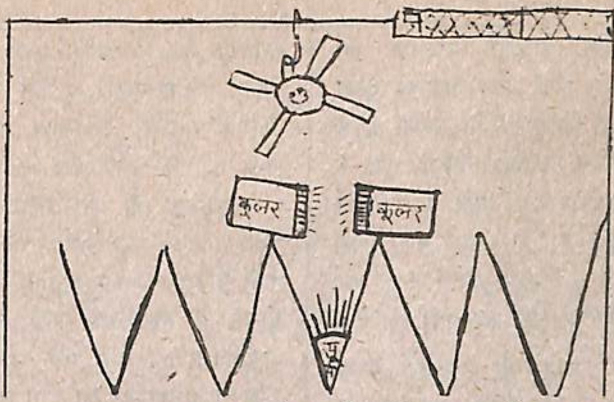
चकमक

मई, 1995 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 5.00





सुनील गुप्ता, छठवीं, इलाहाबाद



प्रमोद वर्मा, पहली, महिदपुर, उज्जैन, म.प्र.

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-10 अंक 11 मई, 1995
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फोन : 563380

117 वें अंक में.....

विशेष

कहानी

कविताएँ

धारावाहिक

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण : जया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

बाल विज्ञान पत्रिका चकमक का फ़रवरी, 95 अंक पढ़ा। पढ़कर देखा कि शुरुआत के पृष्ठों में बच्चों द्वारा जो काल्पनिक चित्रांकन किया गया है या बच्चों द्वारा जो चित्र प्रकाशनार्थ भेजे जाते हैं वे छोटे-बड़ों को कल्पनाकाश में उड़ाने को मजबूर कर कुछ कर दिखाने को उकसाते हैं।

'मेरा पन्ना' के अन्तर्गत बच्चों द्वारा प्रेषित 'आप बीती' प्रेरणाप्रद व ज्ञानप्रद है। साथ ही सर्जना पर बल देती है। 'सही आकार' पर 'विशेष' देकर प्राणियों के आकार-प्रकार बताकर उस सर्जक की ओर सोचने को विवश करता है जिसने ये संसार रचा है। 'मिलो जिराफ़ से' आलेख में जिराफ़ों की जानकारी मिली। भिन्न-भिन्न चित्र देखकर भी उनके बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है।

पत्रिका में कई कविताएँ, पहेलियाँ बच्चों को गुदगुदाती हैं। कैंसर व उसके ऑपरेशन कराने की दी गई जानकारी (कविता) देखकर लगता है कि पत्रिका में विविधता है। 'किस्सा आफ़न्ती का' व उसका चित्रांकन विनोदपूर्ण है। माथापच्ची व प्रयोगशाला में दी गई जानकारी ज्ञानवर्द्धक है। अतः कहा जा सकता है कि चकमक अपने उद्देश्यों पर सफल सफ़र करती हुई आगे बढ़ रही है।

❑ किशोरीलाल गुप्त, सागर, म.प्र.

मैं चकमक पत्रिका का कई वर्षों से पाठक हूँ। अभी फ़रवरी, 95 का अंक पढ़ा, जिसने मुझे अपने माध्यमिक स्तर तक के होशंगाबाद विज्ञान की याद ताज़ा करा दी। अभी मैं विद्यार्थी हूँ। मुझे इस अंक में विशेष-2 'जे.बी.एस. यानी जाँबाज व्यक्ति' लेखक सुशील जोशी द्वारा लिखित लेख बेहद प्रेरणास्पद तथा जीवटता से भरा लगा। मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा रही कविता 'कैंसर चीज़ बड़ी है मस्त।'

❑ तन्मय दुबे, छीपाबड़, खिरकिया, म.प्र.

चकमक का फरवरी, 95 का अंक मिला। जे.बी.एस. हाल्डेन की एक किताब से मैंने दो साल पहले कुछ लेख पढ़े थे। इस अंक में जे.बी.एस. पर सुशील जी का छोटा-सा लेख पढ़कर मज़ा आ गया। 'कैंसर चीज़ बड़ी है मस्त' तो लगता है मूलरूप से हिन्दी में ही लिखी गई थी। आपने अनुवादक का नाम नहीं छापा। अगले अंक में अनुवादक का नाम छापें।

❑ इरफ़ान, नई दिल्ली

(फ़रवरी, 95 अंक में प्रकाशित जे.बी.एस. हाल्डेन की कविता 'कैंसर' के अनुवादक सुशील जोशी हैं। - सम्पादक)

पाठक लिखते हैं

चकमक मार्च, 95 का अंक अपनी अनोखी प्रस्तुतियों से बड़ा ही जीवन्त, मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक है। छठवीं के अपने छात्रों के साथ अंक पढ़ा, पढ़ाया और रेखा दृष्टि के करिश्मों का विज्ञान समझाया। सच बाल पत्रिकाओं में 'चकमक' अलग है।

❑ देवेन्द्र कुमार पाठक, शिक्षक,
शा.उ.मा.वि. नई कटनी, म.प्र.

चकमक का मार्च, 95 का अंक पढ़ा। इस अंक में 'सेहत' पर आपने जो आँखों के बारे में जानकारी दी, अच्छी रही। कृपया यह स्तम्भ आगे भी जारी रखें व सेहत के बारे में जानकारी देते रहें।

❑ आशिष रायना, किशनगंज,
बारां, राजस्थान

बच्चों की पत्रिका चकमक के गत वर्ष के सभी अंक देखे, बहुत ही अच्छे लगे। अगर सम्भव हो सके तो बच्चों की रूचि के कुछ अन्य स्तम्भ भी शुरू कीजिए तो पत्रिका अधिक रुचिकर हो जाएगी। जैसे पहेली बूझो, हँसो-हँसो, तुम पूछो हम बताएँ, अपने देश (शहर) को जानो, आँचलिक खेल, महापुरुषों का बचपन, नैतिक शिक्षा की कहावतें, प्राचीन ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय, उसकी मुख्य बातें व कहानियाँ, विदेशी प्राचीन ग्रन्थों का भी परिचय।

पत्रिका में ये सभी स्तम्भ रेगुलर हो सकें, इसके लिए आपको सही लगे तो बच्चों की पेंटिंग की संख्या कुछ कम कर दें। पेंटिंग अगर एक ही उम्र के बच्चों की एक श्रेष्ठ पेंटिंग छापें तो संख्या कम हो सकती है। किसी पेंटिंग एक्सपर्ट से उन पेंटिंग के बारे में सुझाव भी दिए जाएँ तो बच्चों को ज़्यादा प्रेरणा मिलेगी।

सम्पादकीय आप व्यक्तिगत नाम से लिखें व बच्चों को कुछ करने की प्रेरणा देते हुए हो तो ज़्यादा प्रभावशाली होगा। 'चकमक परिवार' से इफ़ेक्ट ज़्यादा नहीं पड़ता। 'तुम्हारे मैय्या' या 'तुम्हारी दीदी' नाम से सम्पादकीय ज़्यादा अच्छा लगता है।

सुझावों को अन्यथा न लें। वैसे मुझे आपकी पत्रिका बहुत जानकारीपूर्ण लगी। आप विज्ञान के हैं इसलिए पत्रिका पर विज्ञान का ज़्यादा प्रभाव है। थोड़ी ऐतिहासिक जानकारी भी हो तो बच्चों को अच्छा लगेगा।

❑ साधना रस्तोगी, जयपुर, राजस्थान

आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका चकमक मुझे बेहद पसन्द है। क्योंकि यह ज्ञानवर्द्धक, रोचक, यथार्थवादी एवं मनोरंजक लगती है।

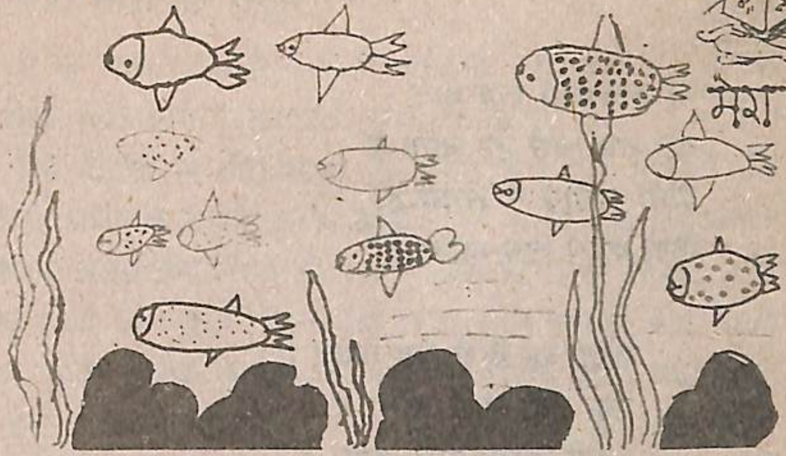
❑ पूजन प्रसाद साहू, भिलाई, म.प्र.

चकमक का मार्च अंक देखा। पिछले नवम्बर, 94 से नियमित लेख-पढ़ रहा हूँ। पाठ्य पुस्तकों की ही भाँति मानसिक विकास के लिए यह पत्रिका शिक्षा क्षेत्र में अपनी अनिवार्यता का आभास करा चुकी है।

❑ श्याम शर्मा, तिरला, धार, म.प्र.

मेरा पन्ना





मोना द्विवेदी, चौथी, पुरौना, रीवा, म.प्र.



सुन्दरलाल, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.



आरिफ खान, चौथी, नरसिंहपुर, म.प्र.



ज्योतिबाला चौधरी, नरवर, उज्जैन, म.प्र.



मीर ऐनुल अली, चार वर्ष, छतरपुर, म.प्र.



जागेश्वर प्रसाद यादव, दूसरी, मुरमुंदा, दुर्ग, म.प्र.



सच्चिता नंद द्विवेदी, पाँचवीं, पुरौना, रीवा, म.प्र.

माँ बतलाओ एक बात

माँ बतलाओ एक बात
यह सब कैसे हो जाता है
पौधा ज़मीन में लगते ही
कैसे बढ़ने लग जाता है।

रोज़ यह कैसे बढ़ जाता है
एक नया पत्ता आता है
इसमें कौन लगा जाता है
या फिर ये खुद ही आता है।

रंग-बिरंगे फूल खिले हैं
मीठे-मीठे फल आते हैं
फल के अन्दर बीज जमे हैं
ये सब हम कैसे पाते हैं।



राजेश गोदारा, तीसरी, धीरेरो, लूणकरनसर, राजस्थान

कोई गहरे रंग में सुन्दर
कोई हल्का रंग लिए
सब पत्तों का हरा रंग है
रंग-रंग के फूल दिए।

बगीचे में जाकर मैं
यह सब देखा करता हूँ
इनकी रचना देख-देखकर
मन में सोचा करता हूँ।

वह कैसा कारीगर होगा
जिसने इन्हें बनाए हैं
अपनी सुन्दरता से देखो
ये सबके मन भाए हैं।

ये बात बहुत छोटी-सी है
लेकिन समझ न आता है
पौधा ज़मीन में लगते ही
कैसे बढ़ने लग जाता है।

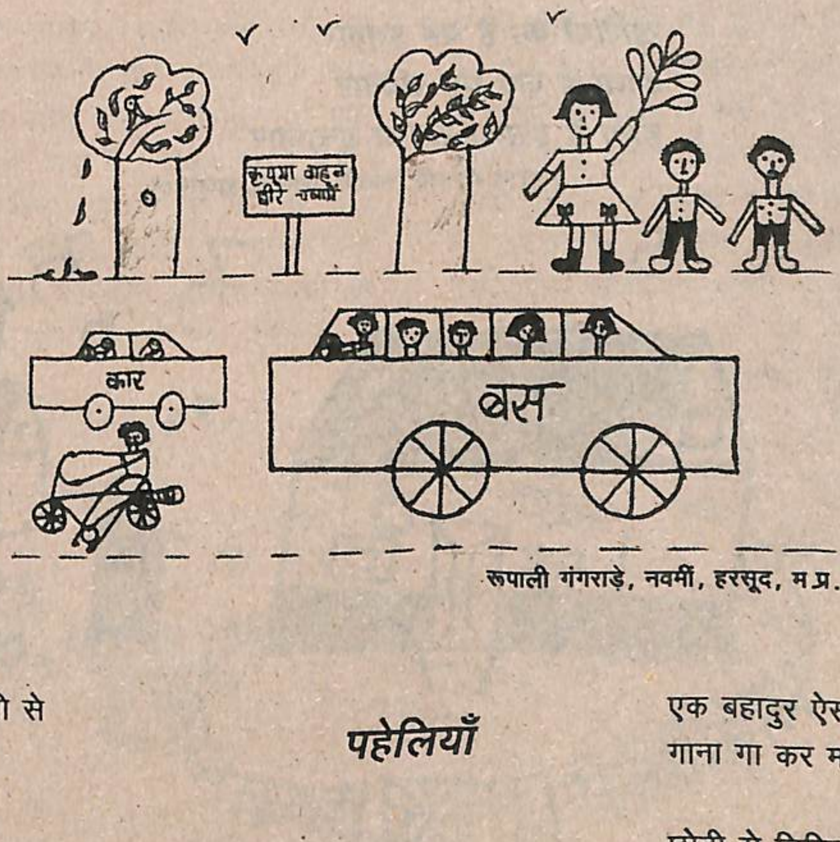
❑ अंजली दुबे, आठवीं, होशंगाबाद, म.प्र.



यात्रा महँगी पड़ी

एक सुबह हम लोग पापा एवं मम्मी जी के साथ मामाजी के यहाँ जाने के लिए बस स्टैण्ड पहुँचे। मेरे पापाजी ने कुल साढ़े तीन टिकटें कटवाईं। हम लोगों की बस यात्रा शुरू हुई। पापाजी-मम्मीजी से मैंने टिकटें ले लीं। यात्रा के समय मैंने उन टिकटों की छोटी-छोटी चिड़िएँ बना डालीं। रास्ते में अचानक गाड़ी रुकी। ठीक उसी समय एक अधिकारी बस के अन्दर आकर टिकट जाँच करने लगा। हम लोगों से जब टिकट माँगी तो टिकट नहीं मिली। वह पापा जी पर बहुत नाराज़ हुआ और कहने लगा कि आप लोग हमेशा बस यात्रा बिना टिकट के करते हैं, अतः टिकट के पैसे और जुर्माना दो नहीं तो पुलिस थाने चलो। मेरे पापा और मम्मी कहते रह गए कि हम लोगों का टिकट कटा है। उसने एक भी नहीं सुनी। अन्त में पापा जी को पैसे देने पड़े। उनकी आँखों में दुख के कारण आँसू थे। उन्होंने मुझे एक शब्द भी नहीं कहा। परन्तु मैं बहुत शर्मिन्दा हुई और लगा कि यह यात्रा बहुत महँगी पड़ी।

❑ स्मिता गर्ग, पाँचवीं, खुटेही, रीवा, म.प्र.



रूपाली गंगराड़े, नवमीं, हरसूद, म.प्र.

पहेलियाँ

राजा लटका फाँसी से
रानी चली घूमने।

एक टाई ऐसी है
जिससे डरते सभी हैं।

❑ टेकलाल डडसेना, बुन्देली, रायपुर, म.प्र.

टोप लगाए खड़ा भिखारी
पहने कपड़े लाल-लाल
देते रोटी सब हैं रोज़
तब भी न भर पाए पेट

❑ कीर्ति चौहान, पाँचवीं, टिमरनी, म.प्र.

एक बहादुर ऐसा वीर
गाना गा कर मारे तीर।

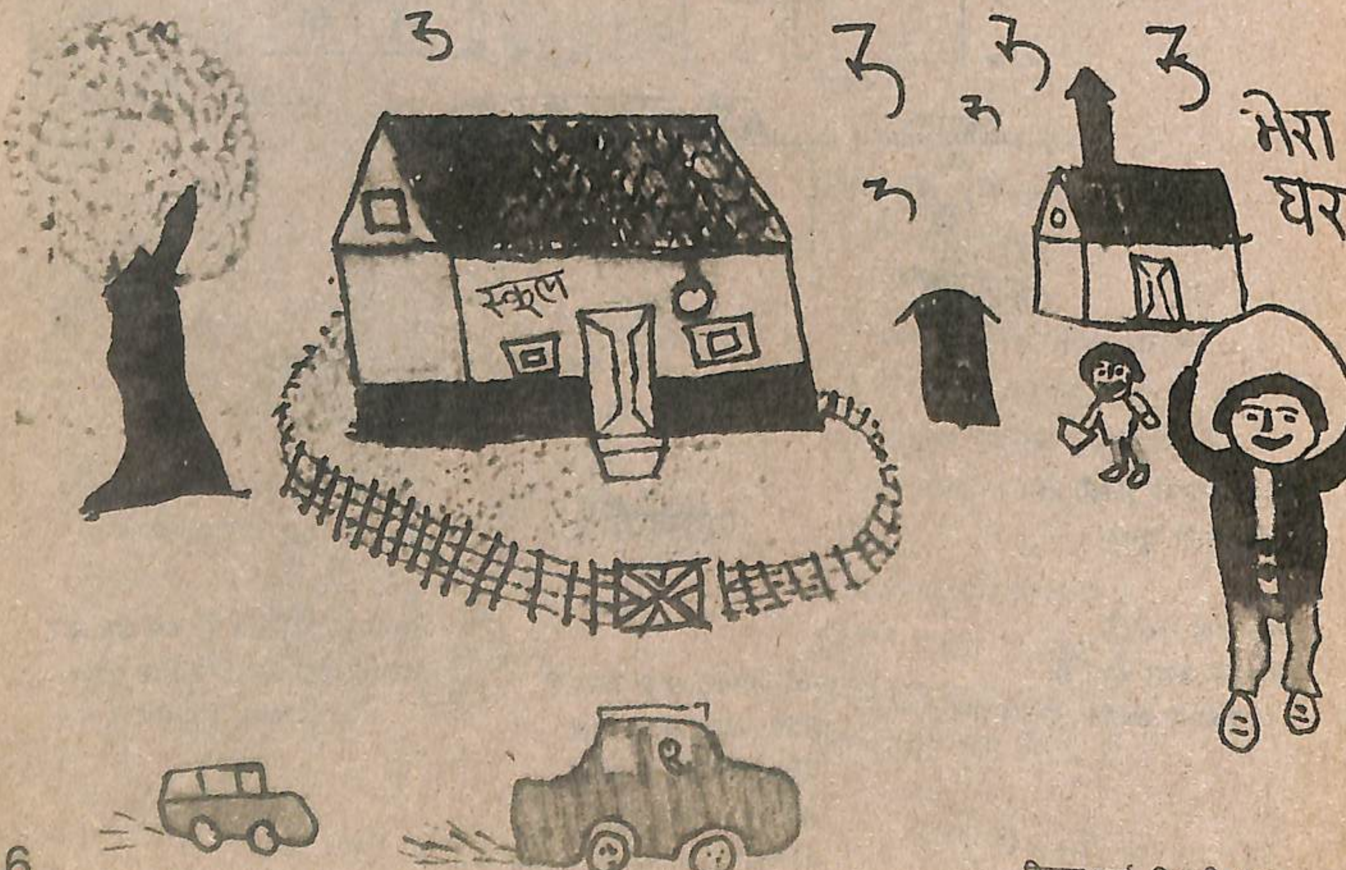
छोटी से डिब्बियों में डब-डब करे
चलता मुसाफिर गिर गिर पड़े।

❑ विवेक जैन, सिवनी, म.प्र.

रविवार

आता है जब रविवार
होता है इस दिन का सबको इन्तज़ार
जाता नहीं कोई पढ़ने आज
रहते हैं दिन भर घर पर आज
देखते हैं टी.वी. दिन भर
दफ़्तर नहीं जाते पापा आज
घूमने जाते हैं हम मज़े करते आज
आज नहीं मिलती हमको
मास्टरजी की डाँट
कई खेल खेला करते सब मिलकर
कोई खो खो खेलता
तो कोई कबड्डी आज
खुशियों का है यह इतवार
आता है जब यह रविवार
होता है इसका सबको इन्तज़ार

❑ महेन्द्र श्रीमाली, सातवीं, फालना, राजस्थान



विशाल शर्मा, टिमरनी, म.प्र.



अगर मगरमच्छ खा जाता?

एक स्कूल में चार सौ छात्र पढ़ते थे। वहाँ अनुशासन का कड़ा नियम चलता था। जो इस नियम को तोड़ता उसे दण्ड दिया जाता था। उस स्कूल में खेलने का बहुत-सा सामान था जैसे रैकेट, फुटबॉल, वॉली-बॉल, क्रिकेट का बहुत-सा सामान। वहाँ के शिक्षक छात्रों को खेलने का नियम और खेलना सिखाते थे।

एक दिन छात्र-छात्राएँ खेल खेल रहे थे। कहीं पर छात्राएँ रैकेट खेल रही थीं, तो कहीं पर छात्र क्रिकेट तो कहीं पर फुटबॉल। कई छात्र फूलों की देखभाल कर रहे थे। उस स्कूल के पीछे एक बहुत बड़ा तालाब था। उस तालाब में एक मगरमच्छ था। वहाँ पर लाल, सफ़ेद रंग के कमल के फूल थे। जब छात्र-छात्राएँ खेल रहे थे उसी समय दो छात्र उस तालाब की ओर बातें करते जा रहे थे। तालाब के किनारे खड़े होकर एक छात्र बोला, "देखो, वह लाल रंग का कमल का फूल कितना सुन्दर दिख रहा है।" दूसरा छात्र बोला, "वाह, क्या अच्छा दिख रहा है।" तो फिर वह छात्र बोला, "चलो फूल तोड़कर लाएँ।" तो दूसरा छात्र कहता है, "नहीं यहाँ पर बहुत बड़ा मगरमच्छ है। जो किसी भी प्राणी को पकड़कर खा जाता है। मैं नहीं जाता।"

लेकिन वह छात्र उसे किसी तरह मना लेता है। वो दोनों फूल तोड़ने जाने लगते हैं। उसी समय एक और छात्र आकर उन दोनों से कहता है, "क्या तुम लोग मरोगे? इस तालाब में बहुत बड़ा मगरमच्छ है तुम दोनों को खा जाएगा।"

"वह मगरमच्छ तो कहीं बैठा होगा हम लोगों को कैसे खा जाएगा।"

वह छात्र प्रधान पाठक के पास जाकर कहता है, "देखिए सर यह दोनों तालाब में फूल तोड़ने जा रहे हैं। मैं इन दोनों को मना करके आपके पास लाया हूँ।"

प्रधान पाठक ने कहा, "तुम दोनों को अगर मगरमच्छ खा जाता तो? और तुम्हारे पिताजी आते और कहते कि हमारा बेटा कहाँ है तो हम क्या जवाब देते? अगर वह पुलिस चौकी जाकर हमारे ख़िलाफ रिपोर्ट लिखवाते तो हमें पुलिस पकड़कर ले जाती और जेल में बन्द कर देती। जिससे हमारी नौकरी चली जाती और हमारे बाल-बच्चे तबाह हो जाते। इस प्रकार प्रधान पाठक ने उन दोनों छात्रों को डाँटा। और उस छात्र को बुलाकर सबके सामने उसे कापी और पेन इनाम में दिया जिसने उन दोनों को रोका था।

❑ **हेमलता, सातवीं, पत्थर जुंजबाणी, गिधपुरी, रायपुर, म.प्र.**



हरि प्रसाद विलारे, छठवीं, चौकड़ी, हरदा, म.प्र.

मेरा पन्ना

बेर का पेड़

एक बार मैं और मेरा साथी कहीं जा रहे थे। हमें रास्ते में एक बेर का पेड़ मिला। बेर बहुत पके हुए थे। मेरे साथी का मन ललचाया। वह कहने लगा, "अरे यार हमें तो बहुत भूख लगी है। क्यों न इस बेर के पेड़ पर चढ़ जाएँ और जी भरकर बेर खाएँ।"

जब मैं पेड़ के ऊपर चढ़ा तो पेड़ घना, लम्बा और फैला हुआ था। मैं डरने लगा कि कहीं मैं गिर न जाऊँ। फिर भी मैंने हिम्मत से काम लिया। मैंने एक डगाल पकड़ी और हिलाने लगा। तभी डगाल टूटी और मैं नीचे गिर पड़ा और बेहाश हो गया। मेरा साथी घबराने लगा कि यह क्या हो गया। उसने मेरे को अपने ऊपर पटक लिया और वापस चलने लगा। जब शहर में पहुँचा तो मुझे अस्पताल में भर्ती कर दिया जब मैं ठीक हो गया तो डॉक्टर ने पैसे माँगे। उसके पास कुछ नहीं था। उसने अपने जूते निकाले और डॉक्टर के हाथ में दे दिए। डॉक्टर बोला, "मैं इनका क्या करूँ!"

❑ श्रवण कुमार गायकवाड़, छठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.



शोभा नागौरी, आठवीं, राजाबरारी, टिमरनी, म.प्र.

गुड़िया गई जंगल

गुड़िया गई जंगल में। जंगल में चढ़ी पेड़ पर। पेड़ से गिरी तो गई हाथी के सूपे (कान) पर। हाथी ने कान हिलाया, गुड़िया गिरी घोड़े पर। घोड़ा दौड़ा आगे। नदी के पास गुड़िया गिर गई। वहाँ था मगर। मगर ने कहा- मैं तुम्हें खाऊँगा। गुड़िया बोली मैं तुमको मीठे आम दूँगी। तुम मुझे मत खाओ और उस पार छोड़ दो। मगर तैयार हो गया। किनारे पहुँचकर उसने मगर को सारे फल दे दिए और हरी घास तोड़ ली। गई तो सब दूर रेत ही रेत थी। गर्मी के मारे वह थक गई। उसने एक ऊँट देखा। उसने ऊँट से कहा- मैं तुम्हें हरी घास दूँगी, तुम मुझे गाँव तक छोड़ दो। वह मान गया। गुड़िया जंगल की सैर करने का यह सपना देख रही थी। तभी मम्मी ने कहा,- "गुड़िया उठो। सुबह हो गई।"

❑ निधि मांगोदिया, धार, म.प्र.

अश्वत्थ या पीपल

पीपल से तो तुम सभी परिचित होगे। यह भारत का मूल निवासी है और भारत में लगभग सभी जगहों पर पाया जाता है। भारत के अलावा यह श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया और म्यांमार में भी पाया जाता है।

पीपल का मूल नाम अश्वत्थ है। कहा जाता है कि इसकी पत्तियाँ पॉपलर नामक एक अन्य पेड़ की पत्तियों की तरह ही हिलती रहती हैं। आर्यों ने यह बात देखी और वे इसे पॉपलर के नाम से पुकारने लगे। यह पॉपलर ही धीरे-धीरे पीपल हो गया।

वैसे पीपल के पत्तों के हिलने-डुलने को लेकर हमारे लोकजीवन में कई गीत और कहावतें आदि प्रचलित हैं, जैसे-

बिना बोलाए मूरख बोले
बिना बयारे पीपल डोले

सचमुच ज़रा-सी हवा चली नहीं कि पीपल के पत्ते हिलना शुरू हो जाते हैं।

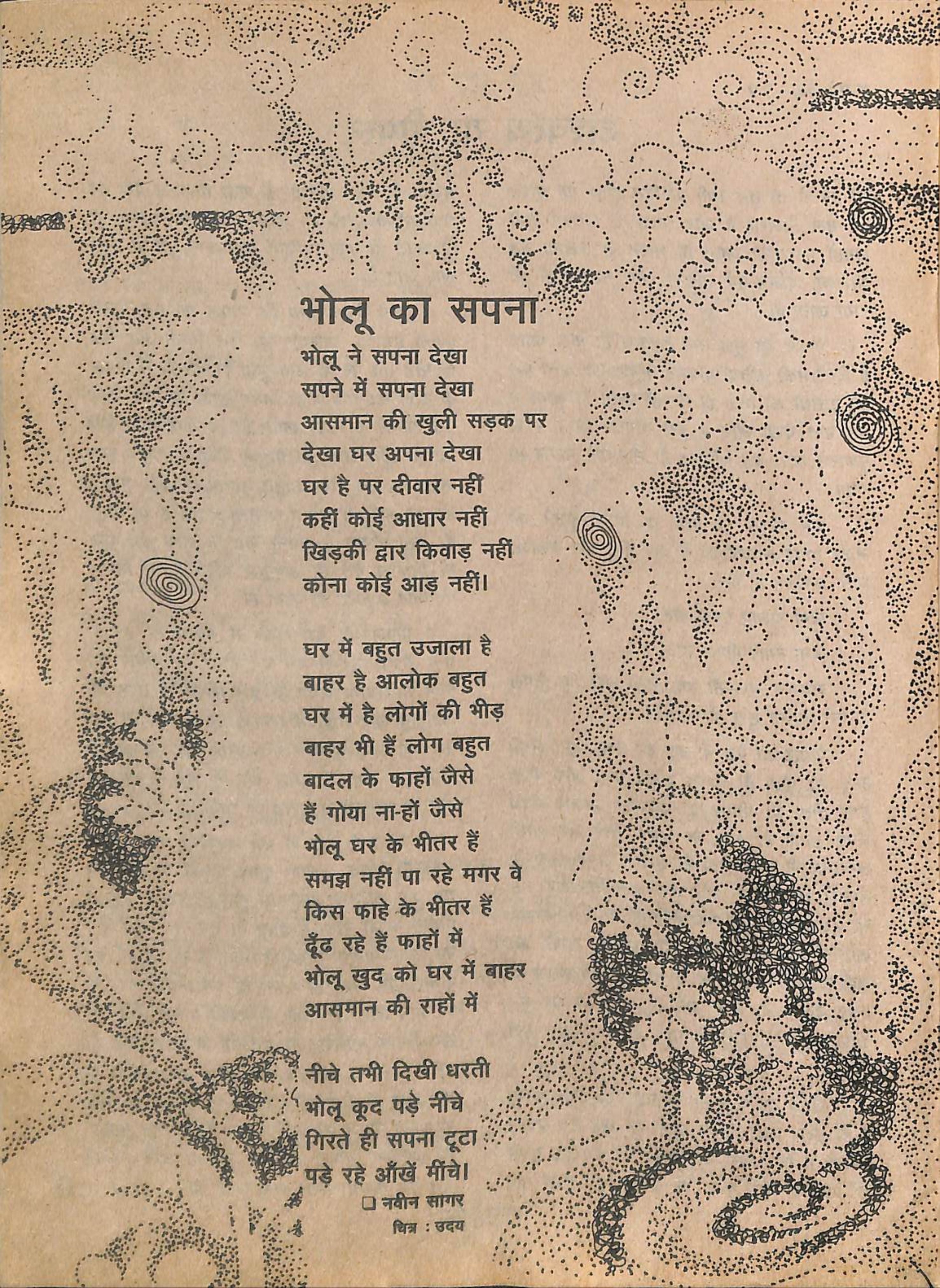
पीपल का पेड़ भी बड़ की तरह बहुत लम्बी आयु का होता है। पीपल काफ़ी बड़ा और फैला हुआ होता है। पीपल के पत्ते का आकार हृदय जैसा होता है। पत्ते के दूसरे सिरे पर थोड़ी लम्बी-पतली नोक होती है। डण्ठल लम्बा होता है। डण्ठल से नोक के छोर तक कुल मिलाकर 15 से 20 सेन्टीमीटर लम्बाई होती है। पत्ते पतझड़ का मौसम शुरू होते ही झड़ने लगते हैं। कहीं-कहीं ये मार्च-अप्रैल के महीने में भी झड़ते हैं। उधर वसन्त के शुरू होते ही शाखाओं पर नई कोंपलें फूटने लगती हैं। पत्तों का रंग गहरा हरा होता है।

पीपल के फूल भी दिखाई नहीं देते। बल्कि वे भी गूलर तथा बड़ के फूलों के तरह इस प्रकार खिलते हैं कि उनसे फल बनने पर बचे हुए फूलों के अवशेषों को फल के अन्दर ही देखा जा सकता है। फल गर्मियों में आता है। फल पेड़ की शाखाओं के सिरे पर छोटी-छोटी उपशाखाओं में ही लगते हैं। फल चिड़ियों तथा अन्य पक्षियों द्वारा खाए जाते हैं।

तुमने देखा होगा कि पीपल का पेड़ किसी पुरानी इमारत, खण्डहर या फिर किसी और पेड़ के मोटे तने पर भी उगा हुआ है। वास्तव में पीपल के बीज पर एक कड़ा कवच होता है। जब कोई पक्षी पीपल का फल खाता है। तो बीज भी उसके पेट में पहुँच जाता है। पेट में बीज का कवच गल जाता है, पर बीज साबुत रहता है। पक्षी पुरानी इमारत आदि में अपना घोंसला बनाते हैं या बैठते हैं। इसी दौरान वे अपनी बीट के साथ यह बीज भी निकाल देते हैं। अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर बीज अंकुरित हो जाता है।

पीपल का पेड़ तेज़ी से बढ़ता है। इसका तना सफ़ेद भूरे-से रंग का होता है। पीपल को बीज से लगाया जाता है। इसे किसी भी तरह की जलवायु और मिट्टी में लगाया जा सकता है। इस पेड़ की जड़ें ज़मीन में गहराई तक जाती हैं। पीपल के पेड़ की छाल जो कि भूरे-से रंग की होती है आसानी से अलग हो जाती है।

पीपल के पेड़ के पत्ते बकरियों को खिलाए जाते हैं। इसके अलावा दूसरे पशुओं के लिए भी यह चारे की तरह इस्तेमाल होते हैं। इसके पत्तों में प्रोटीन काफ़ी मात्रा में होता है। तने से सफ़ेद रंग का चिपचिपा-सा पदार्थ निकलता है जो सूखने पर कठोर मोम जैसा हो जाता है। यह ज़ेवरों में भरने के काम आता है। छाल से रस्सी बनाई जाती है। लकड़ी से माचिस की तीलियाँ बनाई जाती हैं। इसके अलावा इस पेड़ की पत्ती, छाल आदि से कई तरह के रोगों की दवा की जाती है। इन गुणों से अलग पीपल का धार्मिक रूप में भी बहुत महत्व है। इसीलिए पीपल का पेड़ लगाना और उसकी देखभाल करना अच्छा माना जाता है। □□



भोलू का सपना

भोलू ने सपना देखा
सपने में सपना देखा
आसमान की खुली सड़क पर
देखा घर अपना देखा
घर है पर दीवार नहीं
कहीं कोई आधार नहीं
खिड़की द्वार किवाड़ नहीं
कोना कोई आड़ नहीं।

घर में बहुत उजाला है
बाहर है आलोक बहुत
घर में है लोगों की भीड़
बाहर भी हैं लोग बहुत
बादल के फाहों जैसे
हैं गोया ना-हों जैसे
भोलू घर के भीतर हैं
समझ नहीं पा रहे मगर वे
किस फाहे के भीतर हैं
ढूँढ रहे हैं फाहों में
भोलू खुद को घर में बाहर
आसमान की राहों में

नीचे तभी दिखी धरती
भोलू कूद पड़े नीचे
गिरते ही सपना टूटा
पड़े रहे आँखें मींचे।

❑ नवीन सागर

चित्र : उदय

लख्खू

❑ उषा विमलांशु

"**ओ** बाई, आजा मोर रिक्शाम बैठ।" आवाज़ सुनकर मैंने पलटकर देखा।

"अरे लख्खू तुम?" नीली पैंट, सफ़ेद काली चैक की कमीज़, सिर पर चुपड़ा तेल! लख्खू को देख मैं आश्चर्य में पड़ गई।

"हो," कहकर लख्खू मुस्करा दिया, "कहाँ जाना है बाई?" मैं अभी रिक्शे में बैठी भी नहीं थी कि लख्खू पूछ बैठा।

"कहीं नहीं, पास में ही मेरा घर है। मैं पैदल ही चली जाऊँगी।" मैंने कहा।

"आप बैठिये तो सही," लख्खू ने शुद्ध हिन्दी में कहा।

"तू तो बढ़िया हिन्दी भी बोलने लगा है रे लख्खू! बिलकुल ही बदल गया तू तो।" मैं उसके रिक्शे पर बैठते हुए बोली।

"तोहरे आशीर्वाद ले सबे काम होइस," इस बार वह फिर छत्तीसगढ़ी में बोला। शायद मेरे कहने से शरमा गया।

वह मस्ती से रिक्शा चला रहा था, मैं सोच रही थी पाँच साल पहले वाले लख्खू के बारे में।

0 0 0

"ओ बाई, बाई, बाई रे।"

"क्या है? तू फिर आ गया?" मैं बोली।

"मोला रोटी दे दे बाई।" वह गिड़गिड़ाकर बोला।

"नहीं।" मैं बोली।

"दे दे न बाई," उसने याचनापूर्वक दोनों हाथ फैला दिए।

"रोज़-रोज़ आ जाता है तू रोटी माँगने। जा, भाग जा," मैंने डपटकर कहा।

"रोज-रोज कहाँ आत हों? कभ्भू-कभ्भू तो रोटी माँगथों। दे दे न बाई।" वह भी हठी की तरह बैठा ही रहा।

"तूने तो मेरा बाहर बैठना ही मुश्किल कर दिया है", कहकर मैं अन्दर आ गई। खाना तो मैंने बनाया ही नहीं था, उसे रोटी कहाँ से देती। जल्दी से बिस्कुट के डिब्बे से बिस्कुट निकाले, "आ, इधर, ले जा।"



वह कूद कर चहारदीवारी के अन्दर आ गया। बिस्कुट देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई।

"ले, मगर अब तू माँगने आया तो कुछ नहीं मिलेगा। समझे।" मैंने डाँटकर कहा।

"ही, ही, ही ही," वह अपने बड़े-बड़े दाँत खोलकर हँसने लगा।

"हँस क्या रहा है? जा, भाग," मैं उसे हँसते देखकर नाराज़ हो गई।

"हौ, जात हौं," कहकर वह फिर चहारदीवारी फाँद कर भाग गया। यह उसका रोज़ का क्रम था।

मैं सुबह जल्दी-जल्दी बच्चों को तैयार कर स्कूल भेजती। फिर घर के सब काम निबटा कर बाहर जब धूप में बैठती तो न जाने कहाँ से लख्खू आ जाता और घर की चहारदीवारी पर बैठ जाता। मेरे बाहर आते ही, "बाई रोटी दे, रोटी दे," सुर छेड़ देता।

लख्खू दस-बारह साल का लड़का था और सूअर चराने आता था। मेरे घर के पिछवाड़े काफ़ी बड़ा खाली मैदान होने के कारण सब अपने घर का कूड़ा वहीं फेंक जाया करते थे। लख्खू अपने सूअर वहीं छोड़ देता और मेरे घर की चहारदीवारी पर बैठ जाता।

एक दिन मैं बाहर आई तो देखा, लख्खू वहीं चहारदीवारी पर बैठा है। चहारदीवारी से ही सटा एक अमरूद का पेड़ था। उसमें खूब अमरूद लगे थे। वह एकटक अमरूदों को देख रहा था। मेरे बाहर आते ही बोला, "आज रोटी नहीं खाँवाँ बाई। बिहीं खाँवाँ।" बिहीं यानी अमरूद।

"लेकिन मैं तुझे रोटी भी कहाँ दे रही हूँ, अमरूद तो दूर की बात है," मुझे उसके भोलेपन पर हँसी आ रही थी।

"रोटी तो तू मुझे ज़रूर देगी बाई। लेकिन आज मेरा पेट भरा है। तू अमरूद दे, बस।" वह छत्तीसगढ़ी में ही निडर भाव से बोला।

"तू तोड़ ले एक और चला जा," मैंने बेरुखी से कहा।

"न, अपने हाथों से नहीं तोड़ूँगा। तू ही दे।" वह उतावला हो उठा।

"ओह, क्या मुसीबत है।" मैंने एक अमरूद तोड़कर उसको थमा दिया।

"तूने अमरूद क्यों नहीं तोड़ा पहले ही। कौन-सा मैं तुझे देख रही थी।" मैंने उससे पूछा।

"तू मुझे रोज़ रोटी देती है बाई। तेरे ही घर चोरी करूँगा। और वैसे भी मैं चोरी नहीं करता। हाँ, लोग ज़रूर मुझे चोर समझते हैं।" वह खिलखिला पड़ा।

"बड़ा ईमानदार बन रहा है," मैंने उपेक्षा से कहा। हालाँकि मन ही मन मैं उसकी ईमानदारी से प्रभावित थी। अमरूद तो सब उसकी पहुँच के अन्दर ही थे। वह आँख चुराकर तोड़ भी सकता था। मुझे क्या पता चलता। मगर उसने अमरूद नहीं तोड़े। मेरे कहने पर भी। धीरे-धीरे मेरे मन में उसके लिए आत्मीय भाव उत्पन्न होने लगा। अब मैं उसका इन्तज़ार करने लगी। वह आता और एकाध घंटे इधर-उधर की बातें करता। कभी-कभी तो मैं उसे चाय भी पिला देती।

एक बार वह एक हफ़्ते तक नहीं आया। उसके आने पर मैंने उससे पूछा, "अरे लख्खू, इतने दिन बाद आया। कहाँ चला गया था?"

"कहीं नहीं बाई, मैं कहाँ जा सकता हूँ?" आज वह बहुत दुखी दिख रहा था।

"क्या हुआ? तुम इतने उदास क्यों हो?" मैंने ज़ोर डालकर पूछा।

"बाई, मेरे बाबा, को पुलिस पकड़कर ले गई थी।" उसकी आँखों में आँसू आ गए।

"मगर क्यों?" मैंने पूछा।

"उस पर चोरी लगा दी थी दूसरे पारे के लोगों ने। इसलिए।" उसने कहा।

"तो क्या वह चोरी करता है?" मैंने पूछा।

"चोरी क्यों करेगा बाई। हमारा काम नीचा है, सूअर चराना, तो इसी काम के साथ झूठमूठ में लोगों ने चोरी करना, सेंध लगाना जैसे नीचे काम भी हमारे पेशे में जोड़ दिए हैं। कहीं भी चोरी होती

है हमी लोगों को पकड़कर ले जाते हैं। पता नहीं क्यों?'' वह रोने लगा।

मैंने बात को पलटने की कोशिश की, ''तुम्हारे पिता छूटे या नहीं?''

''छूट गए। मैंने सूअर बेच दिए उनको छुड़वाने के लिए।'' वह चुप हो गया। फिर बोला, ''बाई, आज तू रोटी मत दे। कोई काम करने को दे। मैं मेहनत करके रोटी ले जाऊँगा।" कहकर वह फिर रोने लगा।

मैंने उसे खेत से घास निकालने का काम दे दिया। वह अपना काम बड़ी मेहनत से करता। उसके अलावा वह घर के दूसरे छोटे-मोटे काम भी करने लगा। खाली समय में मैं उसे थोड़ा-बहुत पढ़ा दिया करती। धीरे-धीरे दो साल बीत गए। फिर मुझे वह कस्बा छोड़ना पड़ा। मैंने उसे आठ सौ रुपए दिए जो वह मेरे पास ही जमा रखता था। मेरे जाने वाले दिन वह खूब रोया। स्टेशन तक मेरा सामान अपने सिर पर लाद कर लाया।

0 0 0

''अरे लख्खू, रोको रिक्शा, मेरा घर इधर नहीं, उधर है।'' मैं उसके बारे में सोचते-सोचते घर से काफ़ी आगे बढ़ गई थी।

''बाई, आप तो अपना घर ही भूल गईं।'' वह अपने लम्बे-लम्बे दाँत निकालकर हँसने लगा।

घर पहुँचकर मैंने उसे अन्दर बुलाया। वह बाहर बरामदे में बैठ गया।

''लख्खू, तुम यहाँ कैसे आए और तुम्हारा ये रिक्शा?'' मैंने पूछा।

''बाई, आपने जो आठ सौ रुपये दिए थे, उसमें मैंने कुछ और रुपए मिलाकर रिक्शा ले लिया। अब यहाँ एक कमरा भी ले लिया है।'' उसने बताया।

''और तुम्हारे माँ-बाबूजी कहाँ हैं?'' मैंने पूछा।

''अपने साथ ही ले आया हूँ। माँ है, बाबूजी नहीं रहे। मेरे दो छोटे भाई पढ़ रहे हैं स्कूल में। एक सातवीं में है, दूसरा नौवीं में। उसकी आँखों में अनोखी चमक थी, जिसे देखकर मुझे बहुत सुख मिला।

''अच्छा बाई, मैं चलता हूँ।'' वह उठा।

''अरे, अपने पैसे तो लेते जाओ।'' मैंने पाँच का नोट उसकी ओर बढ़ाया।

''न बाई न, मैं पैसा नहीं लूँगा। कोई काम हो तो बताओ।'' वह एकदम पहले वाले लख्खू की तरह बोल पड़ा।

''हाँ, काम तो है। तू मेरे बच्चों को स्कूल छोड़ आया कर सुबह सात बजे।'' मैंने कहा।

''हाँ, ये ठीक है।'' उसने खुशी से कहा।

''कितना पैसा लोगे?'' मैंने पूछा।

''अपने पास ही जमा रखना आप। जितना भी होगा, बाद में दे देना, वैसे ही जैसे तब दिया था बाई। मैं कल सात बजे आऊँगा।'' कहकर वह चला गया।

मैंने पाँच का नोट अलग से रख दिया। यह उसका पहले दिन का मेहनताना था। ❑ ❑




बिंदु
साहू
मैं शिक्षक बनूँगा सर।
मैं डाक्टर बनूँगी, सर।
और तुम बिंदु ?
मैं संपादक बनूँगी, सर। लेकिन मेरी माँ मुझे चींटी बनाने पर तुली हुई है।
चींटी··· तुम किस तरह चींटी बन जाओगी?
सर, आप कहते हैं ना कि चींटी जिस रास्ते से जाती है उसी रास्ते से वापस आती है।
हाँ, विज्ञान ऐसा कहता है।
और मेरी माँ कहती है, 'जिस रास्ते से स्कूल जाना उसी रास्ते से घर आना, समझी।

शार्क

❑ दुलदुल विश्वास

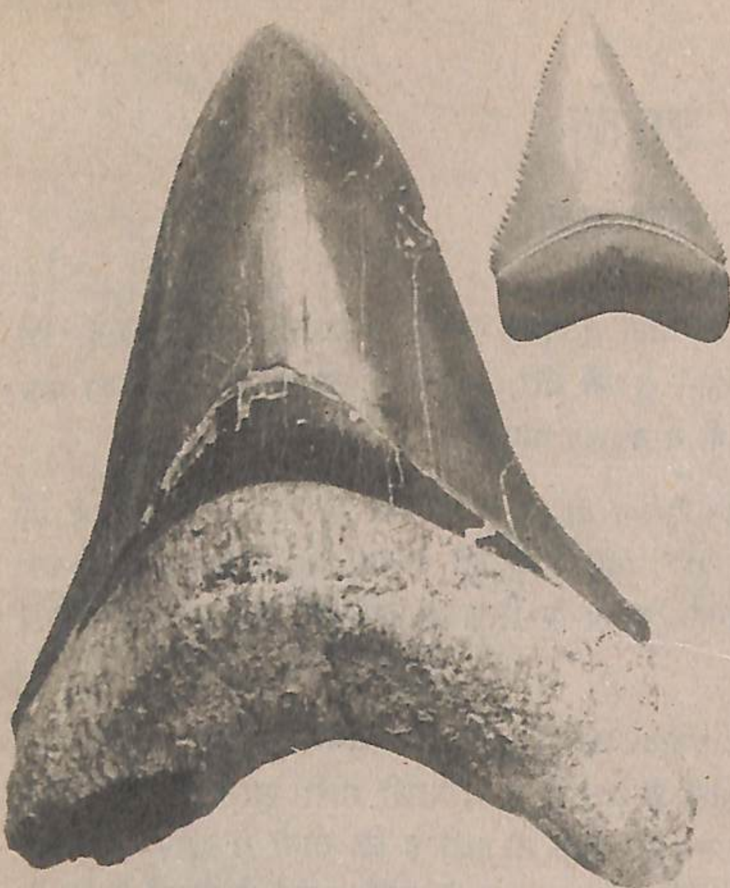
समुन्दर के किनारे रहने वाले मछुआरों के गाँवों में शार्क मछली के अक़्सर चर्चे रहते हैं, कि कैसे, 'फलाने साल में शार्क ने इतनी जानें ले ली थीं', या फिर 'फलाने बूढ़े दादा का एक पाँव शार्क ने पकड़ लिया था और फिर भी वे बचकर वापस आ गए थे' आदि।

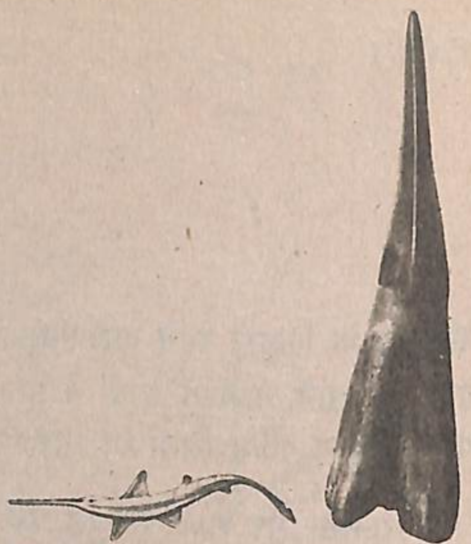
आमतौर पर शार्क से जुड़े ऐसे सारे क़िस्से या तो रोंगटे खड़े कर देने वाले होते हैं या फिर बहुत ही बहादुरी के। जानते हो क्यों? कभी शार्क को देखोगे तो समझ जाओगे। यह दिखती ही इतनी भयावह है। इसका सामना करने के लिए तो गज भर का कलेजा चाहिए, यानी ढेर सारा साहस।

मछलियों को अगर उनकी हड्डी की बनावट के आधार पर दो वर्गों में बाँटा जाए तो एक में शार्क, स्केट और रे जैसी मछलियाँ आती हैं और दूसरे में बाक़ी सारी। शार्क, स्केट और रे में कई समानताएँ हैं जिसमें से सबसे स्पष्ट समानता तो यही है कि तीनों में सख़्त हड्डियों की जगह नर्म, लचीले कार्टिलेज होते हैं। हड्डी की बात बाद में करेंगे। पहले ये देखते हैं कि ये मछलियाँ कितनी पुरानी हैं। तुम्हें शायद यह जानकर हैरानी हो कि ये लगभग पैंतीस करोड़ साल पहले से इस दुनिया में हैं। हालाँकि इतने सालों में समय और बदलती परिस्थितियों के अनुसार इनमें भी कई बदलाव आते रहे हैं जैसा कि हर प्राणी के साथ होता है।

तुम शायद यह पूछ बैठो कि आज बीसवीं सदी में बैठे हम लोगों को यह पता कैसे चला कि पैंतीस करोड़ साल पहले भी शार्क इस दुनिया में थी? असल में यह पता लगाना पुरातत्व-विज्ञानियों का काम है। वे ही ज़मीन के नीचे, समुन्दर की गोद में पत्थरों में दबे सदियों पुराने जीवों के अवशेषों को ढूँढ निकालते हैं। फिर इन अवशेषों और आज पाए जाने वाले जीवों के बीच सम्बन्ध के सूत्र ढूँढे जाते हैं। यह काम वे जीव-विज्ञानियों की मदद से करते हैं। फिर यह भी पता लगाया जाता है कि ये अवशेष कितने पुराने हैं। यानी....यह यानी इतना कुछ है कि इस पर विस्तार से चकमक के किसी आगामी अंक में बात करेंगे।

आमतौर पर अवशेष हड्डियों, दाँतों आदि के रूप में ही पाए जाते हैं। क्योंकि बाक़ी शरीर तो सड़-गल जाता है। पर ये कई बार पत्थरों या मिट्टी की सतहों के बीच सुरक्षित बच जाते हैं। चूँकि शार्कों का ढाँचा हड्डियों से नहीं कार्टिलेज से बना होता है इसलिए इनके अवशेषों में ज़्यादातर दाँत ही मिलते हैं। कहीं-कहीं कैल्शियम चढ़ी कुछ कार्टिलेज या रीढ़ भी सुरक्षित मिल जाती हैं। लेकिन पूरे शरीर की बनावट वाले अवशेष तो नहीं के बराबर ही मिलते हैं। फ़िलहाल आगे के पृष्ठ पर तुम कुछ अवशेषों के चित्र देखो।





यह दाँत लगभग पाँच से दस करोड़ साल पहले की आरी शार्क का है। अवशेषों और अन्य जानकारी के आधार पर इस मछली का एक काल्पनिक चित्र भी बनाया गया है। आरी मछली और इसके मुँह का हिस्सा एक-सा होने के बावजूद दोनों में कोई सीधा सम्बंध नहीं है। अब तो आरी शार्क का दुनिया से नामो-निशान मिट गया है।

यह है आज की ग्रेट ह्वाइट् (विशाल सफ़ेद) शार्क के एक दाँत और डेढ़ करोड़ साल पहले पाई जाने वाली इसी की पूर्वज शार्क के एक दाँत का तुलनात्मक चित्र। दोनों दाँत अपने वास्तविक नाप में दिखाए गए हैं। ग्रेट ह्वाइट् की औसत लम्बाई लगभग 5 मीटर की होती है। जबकि इसके पूर्वज की लम्बाई कोई 13 मीटर की होती थी। इसके अनुपात में पूर्वज के दाँत भी आज की तुलना में कहीं बड़े होते थे।

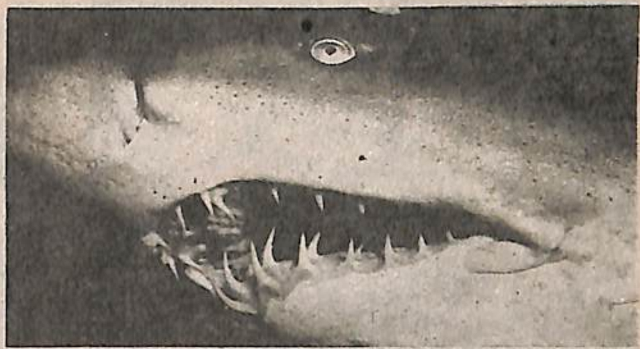


मध्य-पूर्व में लेबनॉन के पास मिला लगभग साढ़े छह करोड़ साल पहले के एक नन्हें शार्क का फ़ॉसिल है यह।



यह शार्क की एक रिश्तेदार स्टिंग रे के लगभग साढ़े पाँच करोड़ साल पहले के पूर्वज के अवशेष हैं। आज की रे से इसकी तुलना करके देखो। बहुत-सी समानताएँ हैं इनमें।

आज भी दुनिया भर के समुद्रों और नदियों में शार्क की कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं। और ये सभी ख़तरनाक या हमलावर हों, ऐसा नहीं। पर जो बड़ी शार्क होती हैं (ख़ासकर टाइगर शार्क और ग्रेट व्हाइट शार्क) वो न सिर्फ़ ताज़े माँस और ख़ून की शौकीन होती हैं बल्कि अपनी तेज़ नाक की मदद से पानी में गिरे एक कतरा ख़ून का पता लगा लेने में भी माहिर होती हैं। शार्क के कान भी बहुत तेज़ होते हैं। अन्य मछलियों की छटपटाहट और परेशानी में निकली उनकी हल्की आवाज़ें ये लगभग एक मील की दूरी से सुन लेती हैं। वैज्ञानिकों ने शार्क का अध्ययन करके पता लगाया है कि ये उनके आसपास तैर रहे प्राणियों के तैरने के कारण पैदा हो रही विद्युत तरंगों को भी भाँप लेती हैं। पर इन गुणों के बावजूद सारी शार्क डरावनी नहीं होतीं।





कुछ शार्क आकार में छोटी और स्वभाव से निरीह होती हैं। लेकिन देखने में बहुत सुन्दर। जैसे यह लेपर्ड (तेंदुआ) शार्क। इसके पीले शरीर पर बनी भूरी चित्तियों के कारण ही इसका यह नाम पड़ा है। यह लगभग 5-6 फीट लम्बी होती है और अपने रंग के कारण समुद्र की गहराई की कम रोशनी में भी दूर से नज़र आ जाती है।



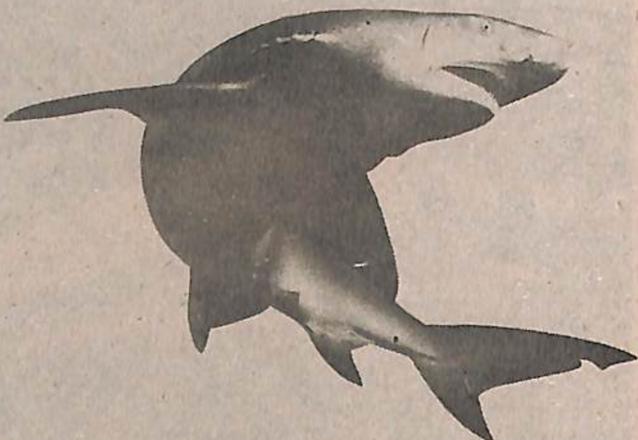
एक छोटी मछली के शिकार में मग्न यह लेमन शार्क दुनिया के तीनों महासागरों- हिन्द, प्रशान्त और अटलांटिक के तटीय गर्म पानी में पाई जाती है। हमारे देश के आसपास यह अरब सागर की तुलना में बंगाल की खाड़ी में ज़्यादा पाई जाती हैं। यह शार्क बहुत ख़तरनाक तो नहीं है, पर कभी-कभी आदमी पर हमला कर देती है।



यह एक मरी हुई शार्क का जबड़ा है। इसे ग़ौर से देखो तो इसमें तेज़ धारदार दाँतों की कई कतारें जमी दिखेंगी। हाँ जी, शार्क के जबड़े में एक नहीं, कई जोड़ी दाँत होते हैं। ये दाँत लगातार बढ़ते रहते हैं। जब सामने की जोड़ी घिस जाती है तो वह झड़ जाती है और उसकी जगह उसके पीछे वाली जोड़ी ले लेती है। यह क्रम ज़िन्दगी भर चलता रहता है। एक बड़ी शार्क अपनी ज़िन्दगी में लगभग 20,000 दाँत इस्तेमाल करके झड़ा देती है।



शार्क के दाँतों की बात से शल्कों की बात भी जुड़ी हुई है। यह तो शायद तुम सभी जानते होगे कि मछली के पूरे शरीर पर शल्क होते हैं। पर शार्क के शल्क और दाँत एक ही बनावट के दो बदले हुए रूप होते हैं। यहाँ शार्क के तेज़ धारदार शल्कों का चित्र बड़ा करके दिखाया गया है। ये शल्क इतने तेज़ होते हैं कि कोई शार्क को हल्के-से भी छूता हुआ गुज़रे तो उसका शरीर छिल जाए।



हड्डियों का न होना ही शायद बड़ी शार्कों को भीमकाय शरीर के बावजूद इतना लोचदार और फुर्तीला बना देता है। यह शार्क तैरते हुए फुर्ती से पीछे पलटती है। चित्र में देखो-पर सावधान! इस तरह की हरकत शार्क हमला करने की तैयारी में करती है। हमले की तैयारी का एक संकेत यह भी है कि शार्क तैरते हुए छोटी-सी जगह में 8 का आकार बना रही हो। आमतौर पर मछुआरे ऐसे संकेतों को पहचानकर चुपचाप वहाँ से खिसक लेना ही बेहतर समझते हैं।

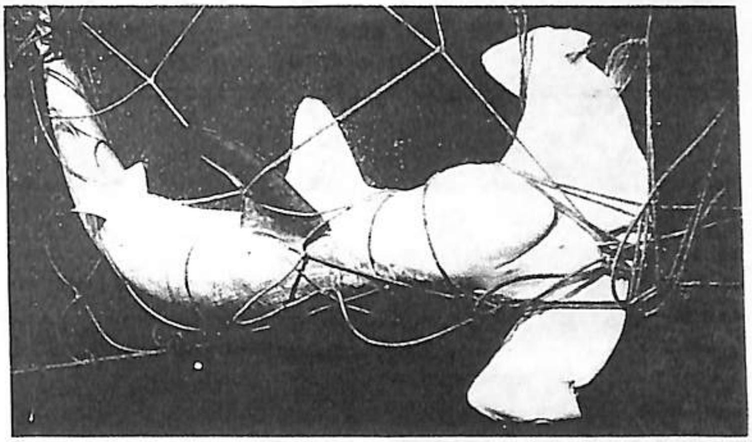


तुमने शुरू में पढ़ा कि शार्क के पूरे शरीर में हड्डी नहीं होती है। उसकी जगह कार्टिलेज होते हैं- ठीक वैसे ही जैसे हमारे कानों में होते हैं। अपने कान छूकर देखो। लचीली लेकिन सख्त कार्टिलेज, हड्डियों की तुलना में कई गुना हल्की होती हैं। इस चित्र में शार्क की एक प्रजाति-स्केट की कार्टिलेज की बनी रीढ़ दिखाई गई है।



और ये है दुनिया की सबसे छोटी शार्कों में से एक। लगभग 20 से.मी. की औसत लम्बाई वाली यह शार्क समुन्दर में काफ़ी गहराई में रहती है। इसे लालटेन शार्क कहते हैं क्योंकि अन्धेरे में इसका शरीर चमकता रहता है।

हैमरहेड शार्क। इसके सिर की ख़ास बनावट के कारण ही शायद इसका नाम हैमर हेड (हथौड़ा सिर) शार्क पड़ा है। दुनिया भर में समुद्रतटों पर शार्कों से बचने के लिए ऐसे जाल बिछाए जाते हैं, जिनमें फँसकर ये शार्क तैर नहीं पाती हैं। और कोई मछली अगर तैर नहीं पाए तो उसके गलफड़ों में से पानी नहीं गुज़रता। इससे उसे ऑक्सीजन नहीं मिल पाती और दम घुटने से वह मर जाती है।

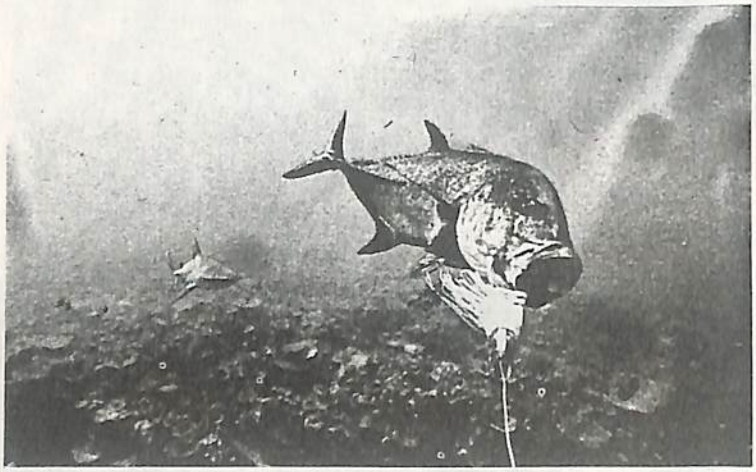




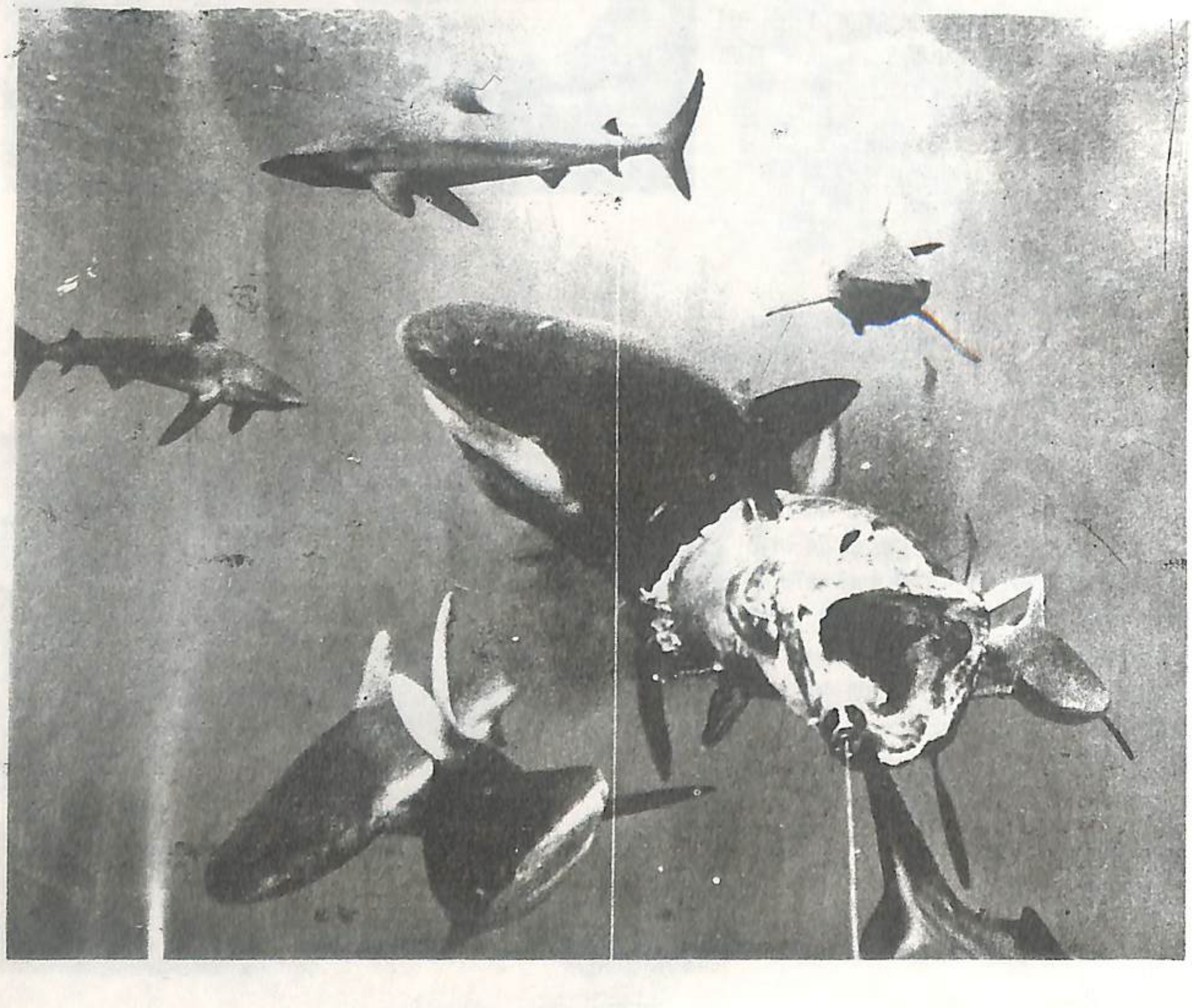
यह है पोर्ट माउथ शार्क का मुँह। अजीब-सा है न! अब ज़रा साथ के चित्र में इसके दाँत भी देखो! इसके दाँत दो तरह के होते हैं- सामने वाले छोटे और पैने, शायद शिकार को धर दबोचने और चीरने-फाड़ने के लिए। और पीछे वाले चबाने के सपाट-से।



बड़ी शार्क शिकार के मूड में हो तो बहुत ख़तरनाक होती है, यह तो तय बात है। इसीलि
यह सलाह दी जाती है कि ज़ख्मी हो जाने पर वे जल्द-से-जल्द किनारे आ जाएँ। इसी
पकड़े रहना भी ख़तरे से खाली नहीं होता। शार्क का अध्ययन कर रहे लोगों ने कई बार
जब कोई शार्क घायल हो गई, तो बाक़ी सारी शार्क शिकार को छोड़ ताज़ा खून के लिए
चित्रों में कुछ ऐसा ही नज़ारा है।

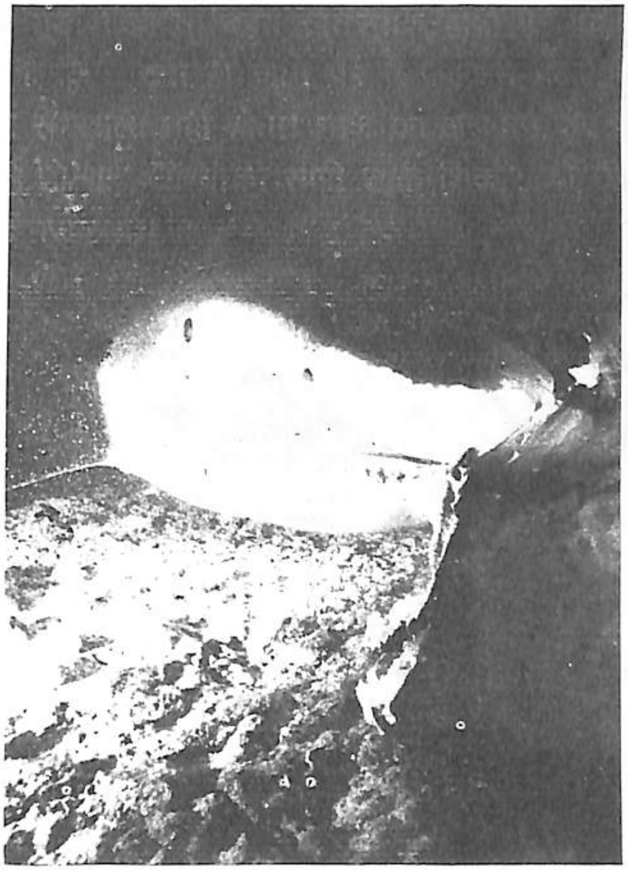


समुद्र में शार्कों को आकर्षित करने के लिए इस मछली को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा। इसलिए इसे चारा डालकर फँसाया जा रहा है। चारे की डोर में बँधे कैमरे से ही यह चित्र लिया गया है।



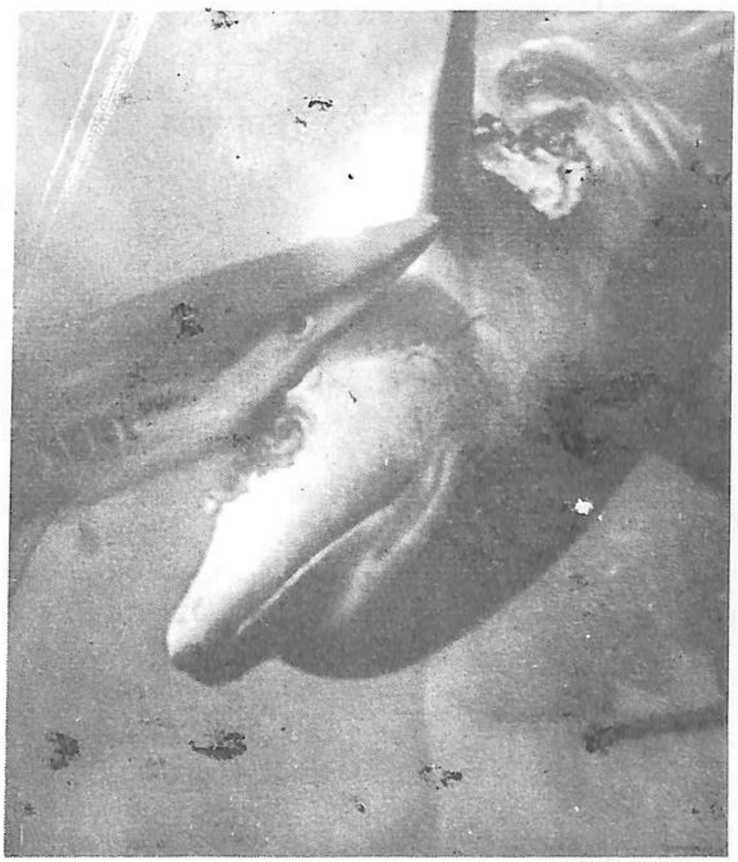
*चारे के
छटपटा
ख़ून की
को भाँ
पता ल
शिकार
पिछला
है।*

लिए मछुआरों या समुद्री गोताखोरों को हमेशा
तरह गहरे पानी में किसी ज़ख्मी मछली को
यह देखा है कि किसी शिकार पर झपटते हुए
उसी घायल शार्क पर झपट पड़ीं। यहाँ दिए



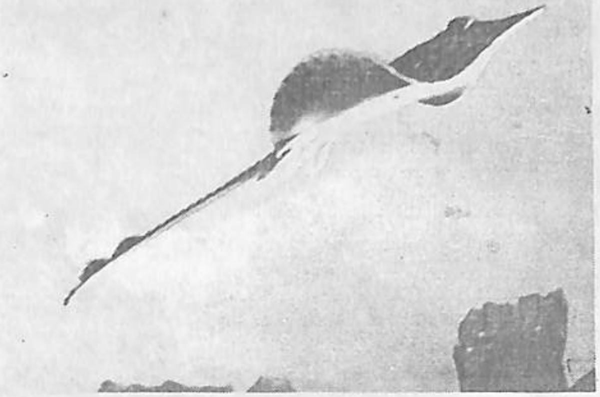
शार्क सिर्फ़ दूसरी मछलियों या जीवों का ही शिकार करती हो, ऐसा नहीं। यूँ अगर कोई और शिकार नज़दीक हो तो वे एक-दूसरे को नहीं छेड़तीं। पर छीना-झपटी में कोई शार्क घायल हो जाए और उससे ख़ून बहने लगे तो फिर उसकी शामत आ जाती है। उसके अपने साथी ही ख़ून के लिए उस पर टूट पड़ते हैं। यहाँ इसी तरह घायल एक शार्क बनी है दूसरी शार्क की शिकार।

*लोभ में काँटे में फँस गई मछली की
हट से पैदा हुई हल्की विद्युत तरंगों,
महक और मछली की परेशान आवाज़ों
कर ही शायद दूर तैर रही शार्क ये
गा लेती हैं कि आसपास ही कोई
मौजूद है। अगले ही क्षण मछली का
हिस्सा शार्क के मुँह में समा चुका होता*

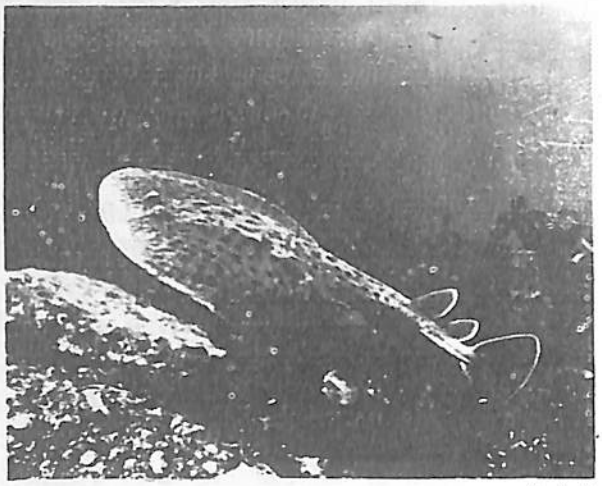


कभी-कभी तो किसी बड़ी शार्क की मौत समुद्र में अन्य शार्कों के लिए खुशी की बात होती है। क्योंकि बहुतों को तिनका हिलाए बिना ही खाना मिल जाता है। ऐसी ही एक दावत उड़ा रही है यह शार्क।

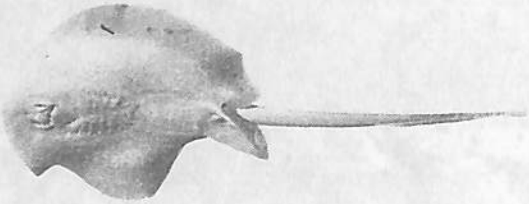
हड्डियों की जगह कार्टिलेज वाले शार्क की कुछ रिश्तेदार



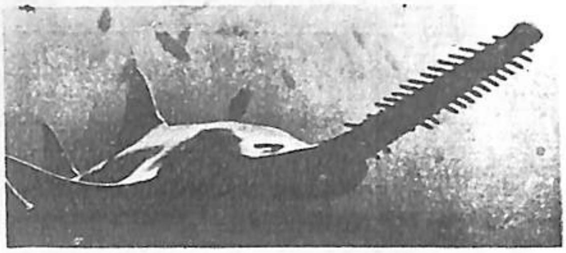
स्केट



टॉरपीडो



रे



सॉफिश या आरी मछली

समुन्दर के किनारे पर रहने वाले बच्चे अक़्सर समुद्र तट पर लहरों के साथ बहकर आई चमड़े जैसी चीज़ की बनी थैलियाँ ढूँढते रहते हैं। तुम सोच रहे होगे कि हम अचानक शार्क से थैलियों पर कैसे आ गए। दरअसल ये थैलियाँ शार्क के अण्डों की ही होती हैं।



कुछ शार्क प्रजातियों में अण्डे मादा के शरीर में ही पलते हैं और वे सीधे ही बच्चों को जन्म देती हैं। पर अधिकतर प्रजातियों में मादा अपने अण्डे एक थैली के रूप में देती है। अण्डा दरअसल इस थैली के अन्दर सुरक्षित रहता है। यह थैली समुद्रतल में पड़ी रहती है और इसकी धागानुमा रचनाएँ समुद्री घास या पौधों से लिपटी रहती हैं। ये थैलियाँ तीन अलग-अलग आकारों में पाई जाती हैं।





थैली के अन्दर निषेचित अण्डा कोई एक महीने के बाद भ्रूण का रूप ले लेता है। चित्र में देखो, नन्हा-सा भ्रूण नाल के ज़रिए अण्डे के पोषक हिस्से से जुड़ा है। वह इसी पर पलकर बड़ा होगा।



इस भ्रूण की उम्र लगभग तीन महीने की है। उसकी आँखें और पूँछ कुछ-कुछ साफ़ दिखाई देने लगी हैं। अण्डों की थैली की बनावट ऐसी होती है कि उसमें से पानी आरपार जा सके। बढ़ते भ्रूण को इसी पानी से ऑक्सीजन मिलती रहती है।

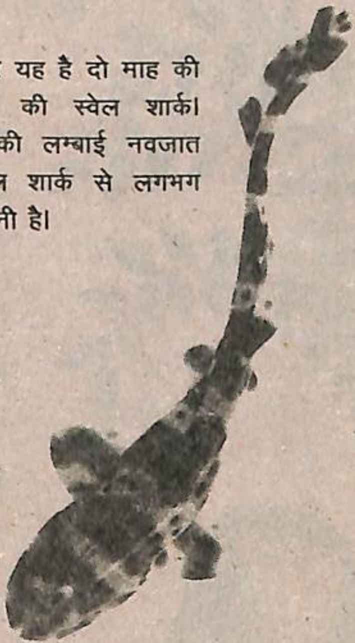


सात महीने की उम्र में यह भ्रूण काफ़ी हद तक शार्क का आकार ले चुका है। अण्डे का पोषक हिस्सा भी लगभग ख़त्म होने को है। लगभग दस महीने के बाद जब यह पोषक हिस्सा ख़त्म हो जाएगा, तो नन्हा शार्क इस थैली से बाहर निकल आएगा।





ऐसे! इसके बाद थैली की धागानुमा रचनाएँ टूट जाती हैं और थैलियाँ समुद्र की सतह पर तैरती रहती हैं। यह नवजात स्वेल शार्क अभी सिर्फ़ 15 से.मी. लम्बा है।



और यह है दो माह की उम्र की स्वेल शार्क। इसकी लम्बाई नवजात स्वेल शार्क से लगभग दुगनी है।

इस लेख के सभी चित्र टाइम लाइफ सीरीज, द इन्टरनेशनल वाइल्डलाइफ इन्साइक्लोपीडिया, शार्क आइविटनेस गाइड, अमेज़िंग एनिमल फैक्ट्स और आइविटनेस हैण्डबुक ऑफ फॉसिल्स से साभार लिए गए हैं।





चिड़िया

तिनके चुनकर लाती चिड़िया
अपना नीड़ बनाती चिड़िया।

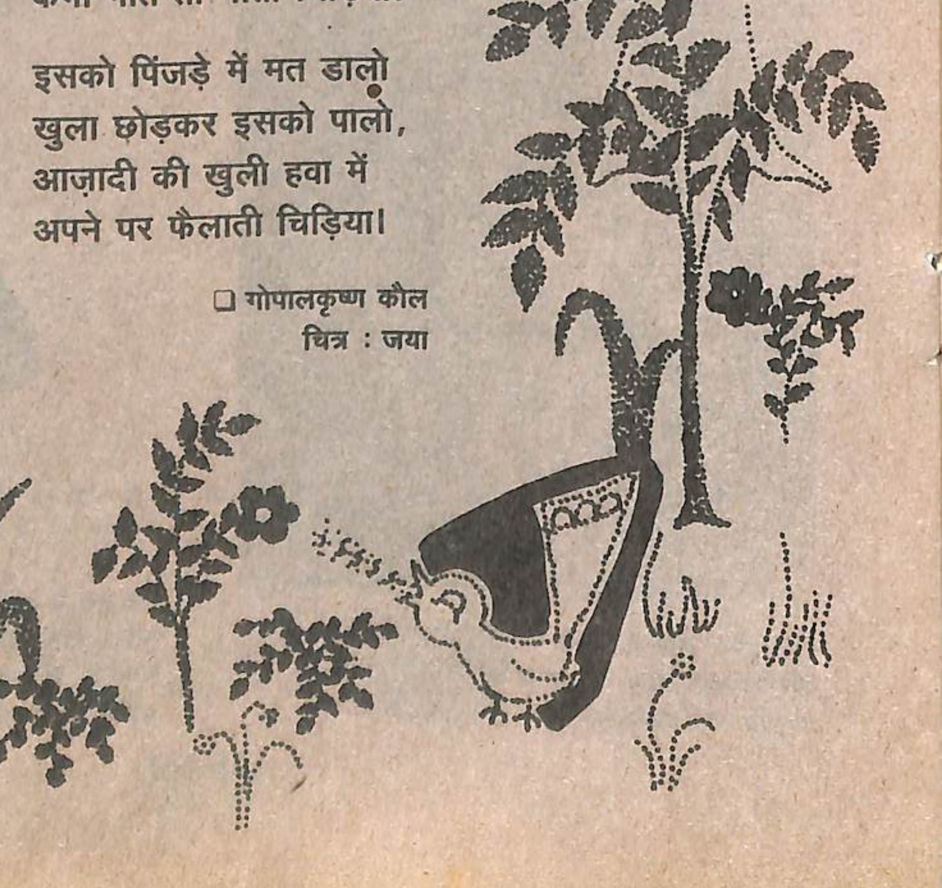
चाहे मुन्ना हो या मुनिया
चाहे गुड्डा हो या गुड़िया,
घर घर की गौरैया बनकर
सबका मन बहलाती चिड़िया।

घर में, वन में और फूलों पर
डाली के हिलते झूलों पर,
कभी फुदककर नाच दिखाती
कभी गीत-सा गाती चिड़िया।

इसको पिंजड़े में मत डालो
खुला छोड़कर इसको पालो,
आज़ादी की खुली हवा में
अपने पर फैलाती चिड़िया।

❑ गोपालकृष्ण कौल
चित्र : जया





शार्क मछली

❑ लेव तोलस्तोय

हमारा जहाज़ अफ़्रीकी सागर-तट पर लंगर डाले खड़ा था। दिन भर मौसम बहुत ही अच्छा रहा था, सागर से ताज़ी हवा के झोंके आते रहे थे। किन्तु शाम होने पर मौसम बदल गया। उमस हो गई और सहारा के रेगिस्तान से ऐसी गर्म हवा आने लगी मानो सीधी भट्ठी से आ रही हो।

सूर्यास्त के पहले कप्तान डेक पर आया और उसने ऊँची आवाज़ में आदेश दिया, 'नहाने की व्यवस्था की जाए!' पलक झपकते कई जहाज़ी पानी में कूद गए। पाल को पानी में लटकाया गया। उसे बाँध दिया गया और इस तरह एक पाल-तालाब बन गया।

जहाज़ पर हमारे साथ दो लड़के भी थे। उन्होंने पानी में सबसे पहले छलाँग लगाई, मगर उन्हें पाल-तालाब बहुत छोटा प्रतीत हुआ। उन्होंने खुले सागर में होड़ करने का फ़ैसला किया।

दोनों लड़के पानी में छिपकलियों की भाँति दिखाई दे रहे थे। वे अपना पूरा ज़ोर लगाकर वहाँ तक पहुँचना चाहते थे जहाँ जहाज़ का लंगर था।

एक लड़का शुरू में अपने साथी से आगे निकल गया, मगर फिर पिछड़ने लगा। इस लड़के का बाप, जो एक अनुभवी तोपची था, जहाज़ के डेक पर खड़ा हुआ तमाशा देख रहा था। बेटा जब पिछड़ने लगा तो पिता ने चिल्लाकर कहा, 'हिम्मत नहीं हारना! और ज़ोर लगाओ!'



अचानक कोई डेक पर से चिल्लाया, 'शार्क!' और हम सभी को पानी में इस विराटकाय समुद्री जन्तु की पीठ दिखाई दी।

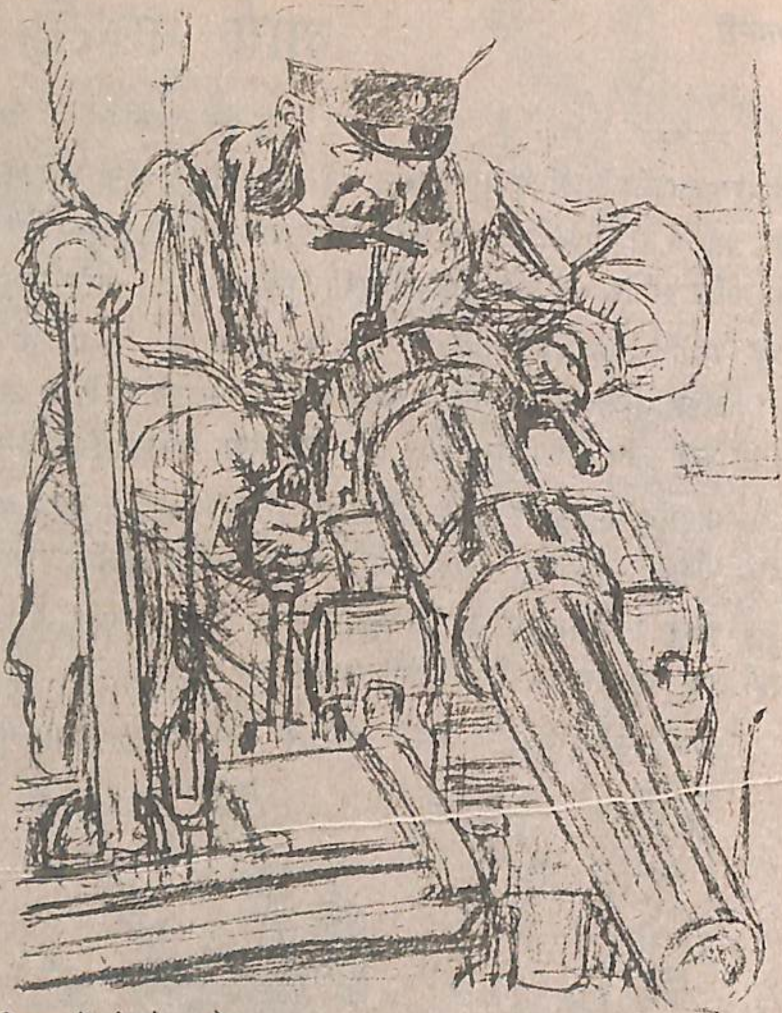
शार्क सीधी लड़कों की ओर बढ़ी जा रही थी।

'वापस! वापस! लौट आओ! शार्क!' तोपची चिल्ला उठा। मगर लड़कों ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी, वे आगे ही आगे तैरते चले गए, पहले से

भी ज़्यादा ज़ोर से हँसते और शोर मचाते हुए।

तोपची को तो जैसे काठ मार गया, ऐसी हालत हो गई कि काटो तो ख़ून नहीं।

जहाज़ियों ने नाव पानी में उतारी, उसमें सवार हुए और अपनी पूरी ताक़त से नाव खेने लगे। किन्तु नाव अभी लड़कों से काफ़ी दूर थी जबकि शार्क केवल बीस क़दम के फ़ासले पर रह गई थी।



लड़कों से जो कुछ चिल्ला-चिल्लाकर कहा गया, शुरू में तो उन्होंने वह नहीं सुना और शार्क को नहीं देखा, मगर फिर उनमें से एक ने पीछे की ओर नज़र घुमाई। हमें उसकी चीख़ सुनाई दी और तब दोनों लड़के अलग-अलग दिशा में तैरने लगे।

लड़के की चीख़ सुनकर तोपची मानो होश में आया। आन की आन में वह तोप के पास जा पहुँचा। उसने तोप का मुँह घुमाया, उस पर झुका, निशाना बाँधा और पलीता हाथ में लिया।

जहाज़ पर हम जितने भी लोग थे डर के मारे सभी की रगों में ख़ून जम गया था। हम सभी इस इन्तज़ार में थे कि अब क्या होगा।

तोप दनदनाई। हमने देखा कि तोपची तोप के क़रीब ही गिर पड़ा और उसने हाथों से मुँह ढाँप लिया। शार्क और लड़कों का क्या हुआ, यह हम नहीं देख पाए थे क्योंकि कुछ देर के लिए धुएँ ने उन्हें हमारी आँखों से ओझल कर दिया था।

जब पानी की सतह से धुआँ हटा तो शुरू में सभी ओर से धीमी-धीमी भनभनाहट सुनाई दी, जो धीरे-धीरे ऊँची होती हुई आख़िर खुशी भरे शोर में बदल गई।

बुज़ुर्ग तोपची ने चेहरे से हाथ हटाए, उठा, और समुद्र पर नज़र डाली।

लहरों के ऊपर शार्क का पीला पेट नज़र आ रहा था। कुछ मिनटों में नाव लड़कों के पास जा पहुँची और उन्हें जहाज़ पर वापस ले आई। ☐ ☐

सभी चित्र : अ. पखोमोव

गुड्डा-गुड़िया

वह है गुड़िया,
वह है गुड्डा!

यह है बुढ़िया,
यह है बुड्ढा!

सोच रही हूँ इक दिन गुड़िया,
हो जाएगी बिलकुल बुढ़िया।
हो जाएगा इक दिन बुड्ढा,
मेरा इतना प्यारा गुड्डा।

हिला करेगा सिर बुढ़िया का,
मेरी इस प्यारी गुड़िया का!
लाठी टेक चलेगा गुड्डा,
लोग कहेंगे इसको बुड्ढा!

मैं किससे किससे झगड़ूँगी,
किसका किसका मुँह पकड़ूँगी।
यही सोचकर मैं चकराई,
इन्हें बनाकर मैं पछताई

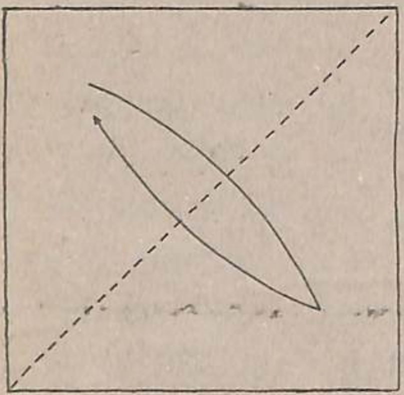
❑ प्रयाग शुक्ल



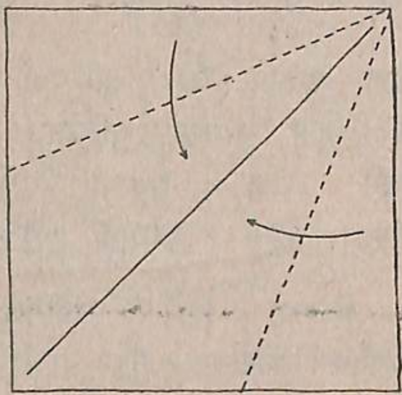
छायाचित्र : आदिवासी लोक कला परिषद, मध्यप्रदेश के सौजन्य से।

बत्तख

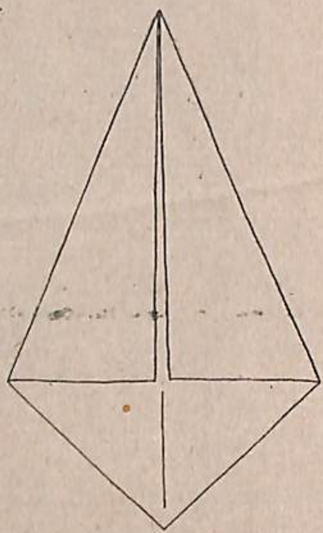
बत्तख तुमने देखी ही होगी, कैसी दिखती है? हमेशा एक जैसी तो नहीं ही दिखती है। चलते वक़्त कुछ और, चुगते वक़्त कुछ और, पानी में तैरते वक़्त कुछ अलग। यहाँ बत्तख बनाने का एक तरीका दे रहे हैं। अब तुम इससे कितने अलग तरीक़े की बत्तख बनाते हो, यह तुम्हारे ऊपर है।



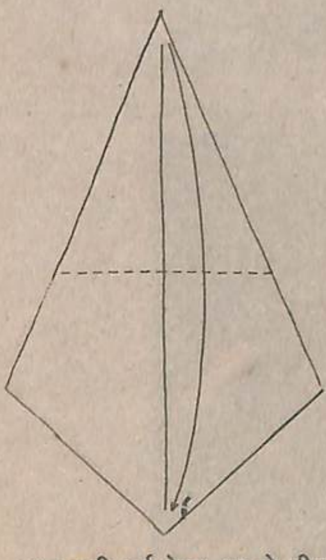
1 एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर वापस खोल लो।



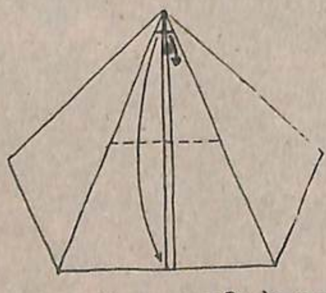
2. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



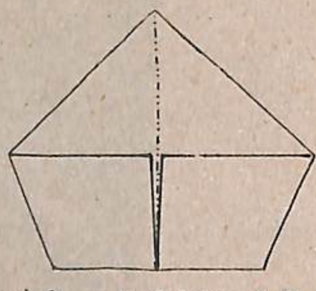
3. इस तरह की आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।



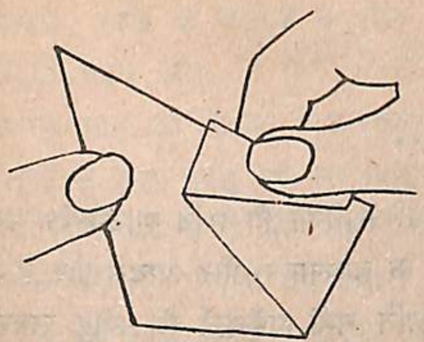
4. अब टूटी हुई रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।



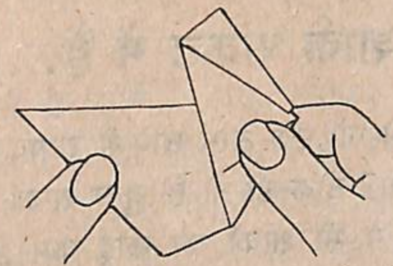
5. इस तरह। अब आकृति के ऊपर के सिरे को पहले छोटी वाली टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। फिर बड़ी टूटी रेखा पर से ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो। इसके बाद आकृति को पलट लो।



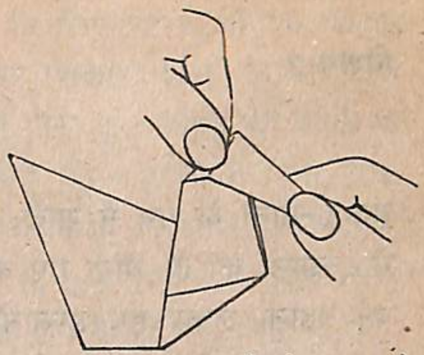
6. ऐसी आकृति मिलेगी। इसे बीच की रेखा पर से आधा करके मोड़ लो।



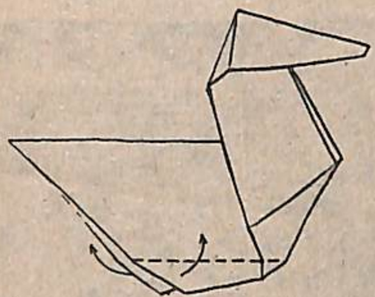
7. इस तरह की आकृति मिलेगी। अब इसे चित्र में दिखाए तरीक़े से ऊपर के हिस्से को खींचकर धीरे-धीरे खोलो। थोड़ा खोलकर दबा लो ताकि मोड़ पक्का हो जाए।



8 इस तरह। ऊपर के हिस्से को खींचते समय नीचे के हिस्से को पकड़े रहना।



9. अब इस आकृति के ऊपर के हिस्से में से सिर का हिस्सा फिर खोलना है। चित्र में देखो किस तरह खोलना है।



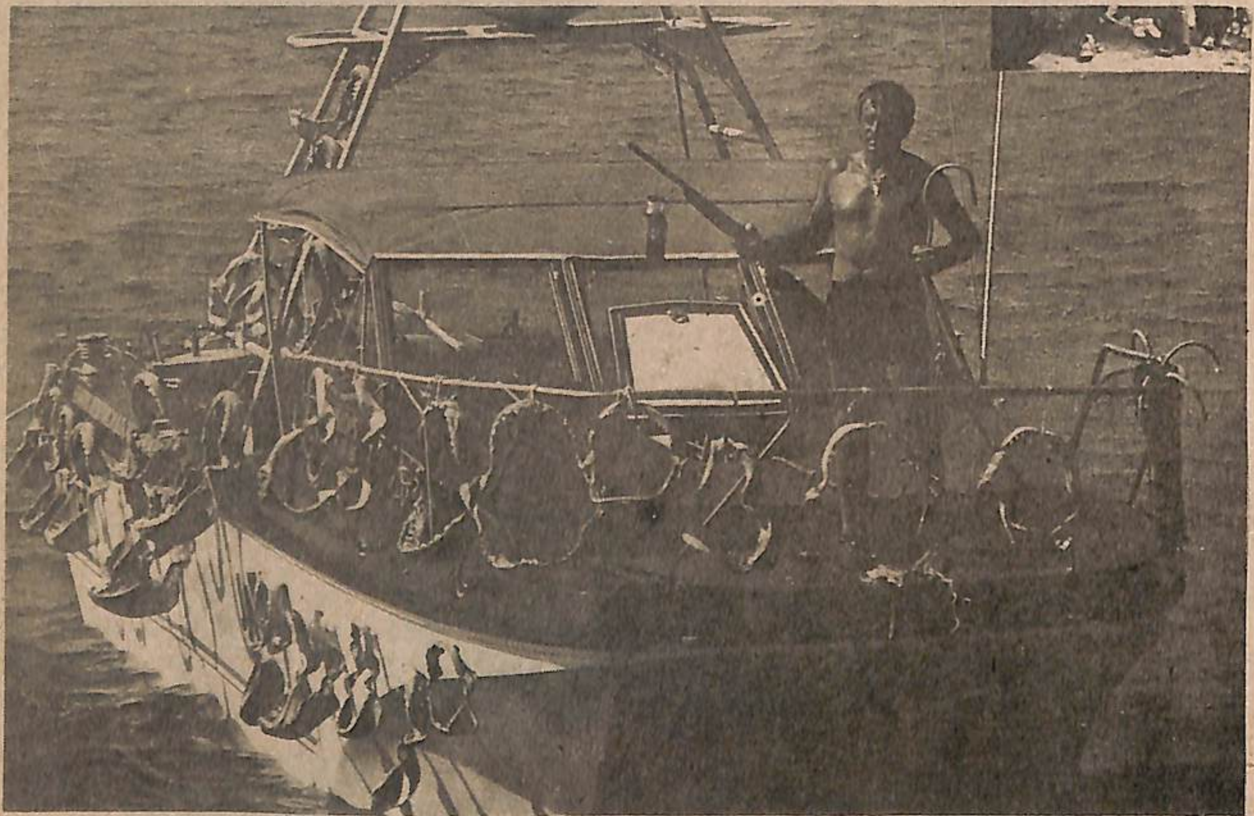
10. देखो बत्तख की आकृति बन गई न! अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। इसी तरह आकृति के दूसरी ओर भी मोड़ो।

11. अब इस बत्तख को नीचे के मुड़े हुए आधार पर टिका दो। चित्र 7, 8 और 9 के मोड़ों में थोड़ा-थोड़ा बदलाव करके बत्तख को कितने ही अलग-अलग तरीक़ों से रख सकते हो।



शार्क संकट में हैं.....

हम इन्सानों के मन में शार्क की जो एक आम छवि है शायद ठीक वैसी ही छवि शार्कों के मन में इन्सानों की है। चौंक गए क्या? ठीक ही तो है। कुछ शार्कों के हमलावर और आदमख़ोर होने का बहाना लेकर हम इन्सानों ने भी शार्कों को कोई कम हानि नहीं पहुँचाई है। और सबसे ज़्यादा दुख की बात यह है कि आदमख़ोर शार्कों के शिकार के नाम पर हर साल मारी जाने वाली शार्कों में से ज़्यादातर छोटी और निरीह शार्क होती हैं। इस चित्र में एक शिकारी ने अपने द्वारा मारी गई शार्कों के जबड़े बड़ी शान से नुमाइश के लिए नाव के चारों ओर लटका रखे हैं। सवाल यह है कि इतनी सारी शार्कों को मारना शान की बात है या शर्म की?



समुद्रतटीय इलाकों में रहने वाले मछुआरे अन्य मछलियों के साथ-साथ शार्क का भी शिकार करते रहे हैं। असल में इन क्षेत्रों के लोगों के भोजन का वह एक लोकप्रिय हिस्सा है। यहाँ तक तो बात ठीक ही लगती है, है ना। शार्क कभी-कभी अपने भोजन के रूप में इन्सान को मारती हैं और इन्सान भी कभी-कभी शार्कों का भोजन करते हैं। लेकिन बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं रही है। भोजन की ज़रूरत से कहीं आगे जाकर आजकल त्वचा की देखभाल करने वाली क्रीम, शार्क की मज़बूत चमड़ी से बनी सजावट की चीज़ें, दाँतों से बने गहने, शान से टाँगे जाने वाले

जबड़े, शार्क के कलेजे के तेल से बनी दवाई और महज़ खेल के लिए भी शार्कों का शिकार किया जाने लगा है। ऐसी किसी ख़ास ज़रूरत के लिए कई बार शिकारी शार्क के शरीर से अपने काम का हिस्सा निकालकर, उसे फिर पानी में छोड़ देते हैं। जैसे कुछ क़म्पनियाँ शार्क के पंखों से एक तरह का सूप बनाती हैं। शार्क के पंख काटकर उन्हें वापस पानी में फेंक दिया जाता है। अब शार्क पँखों के बिना न तो तैर पाती है, न ही उसे गलफड़ों के ज़रिए ऑक्सीजन मिल पाती है। ऐसे में वह बेचारी दम घुटने से तिल-तिलकर मरती है। इस तरह से न सिर्फ़ कुछ शार्क की जानें जाती हैं बल्कि ज़रूरतमन्द लोगों को वह भोजन के रूप में भी नहीं मिल पाती।





दूसरी मछलियों की तुलना में शार्क की प्रजनन दर बहुत धीमी होती है। यानी शार्क की आबादी बहुत धीरे-धीरे ही बढ़ती है। तिस पर इन्सान जब सिर्फ़ अपने फ़ायदे की सोचकर बेलगाम इनका यों शिकार किए जा रहा है तो इनकी संख्या बेहद कम हो जाना स्वाभाविक ही है। हुआ भी यही है। कई समुद्रतटीय इलाकों में शार्क की कुछेक प्रजातियों (थ्रेशर शार्क, टाइगर शार्क, ग्रेट ह्वाइट शार्क आदि) की आबादी इतनी कम हो गई है कि उनके विलुप्त हो जाने का ख़तरा पैदा हो गया है।

यह तो शायद तुम जानते ही होगे कि दुनिया के सभी जी[illegible]जन चक्र के ज़रिए एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए किसी एक जीव के पूरी तरह से ख़त्म हो जाने पर प्रकृति में असंतुलन होने लगता है जिसका असर सभी जीवों पर पड़ता है। शार्क के ख़त्म हो जाने पर यह असंतुलन बढ़ेगा। इस ख़तरे को देखते हुए अब दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया जैसे कई देशों में विलुप्त होती प्रजातियों को सुरक्षित घोषित कर उनके शिकार पर प्रतिबन्ध लगाया गया है।

प्रतिबन्ध लगाना, कानून बनाना इस स्थिति से बचने का एक तरीक़ा हो सकता है लेकिन इससे उन मछुआरों और तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों को, जिनका यह प्राकृतिक भोजन है, नुकसान होगा। बदलाव तो शायद हम इन्सानों को अपने नज़रिए में ही लाना होगा कि जहाँ तक ज़रूरी हो वहीं तक प्रकृति का इस्तेमाल करें, उसका सहारा लें। अपने ऐश-ओ-आराम या झूठी शान के लिए प्रकृति पर हमला करके हम जाने-अनजाने अपना ही नुकसान कर रहे होते हैं।

❑ दुलदुल विश्वास

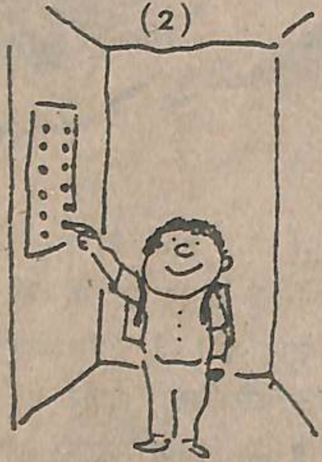


माथापच्ची

(1)

एक गोल पीपे में पानी रखा हुआ था। हरि और मुन्नी में बहस हो रही थी कि पीपा आधे से ज़्यादा भरा है या आधे से कम। पर वहाँ नापने का भी कोई साधन नहीं था। क्या तुम बता सकते हो कि हरि और मुन्नी को क्या करना चाहिए?

(2)



तुमने शायद सुना होगा कि महानगरों में बहुमंज़िली इमारतें होती हैं। जिनमें दस से लेकर तीस- पैंतीस से भी अधिक मंज़िलें होती हैं। इन इमारतों में सीढ़ी तो होती ही है, लेकिन साथ ही लिफ़्ट भी लगी होती है। लिफ़्ट यानी बिजली की मोटर से चलने वाला एक छोटा-सा कमरा (केबिन)। यह केबिन बटन दबाने पर ऊपर-नीचे जाता है। जितनी मंज़िल उतने बटन।

बम्बई में ऐसी ही एक दस मंज़िली इमारत में आठवीं मंज़िल पर बबलू रहता है। बबलू तीसरी में पढ़ता है। हर रोज़ स्कूल जाने के लिए वह लिफ़्ट से आठ मंज़िल नीचे उतरता है। परन्तु शाम को स्कूल से लौटकर कभी-कभी वह लिफ़्ट से पाँचवीं मंज़िल तक ही जाता है और बाक़ी तीन मंज़िल सीढ़ी से!

ऐसा क्यों?

(3)

9 8 7 6 5 4 3 2 1 = 100

क्या तुम इस समीकरण को सच कर सकते हो? लेकिन दो बातों का ध्यान रखना। एक यह कि अंकों का क्रम नहीं बदले और दूसरी यह कि इनके बीच केवल धन या ऋण का इस्तेमाल कर सकते हो। और वह भी केवल चार बार।

(4)

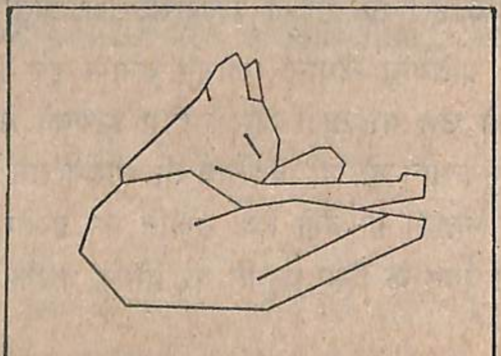
चार ऐसी संख्याएँ चुनो जिनका जोड़ 36 हो। सिर्फ़ इतना ही नहीं। ये संख्याएँ ऐसी भी हों कि पहली में 2 जोड़ें, दूसरी से 2 घटाएँ, तीसरी का अगर 2 से गुणा करें और चौथी को 2 से भाग दें तो चारों क्रियाओं का हल एक-ही आए।

(5)

रानू ने राहुल से कहा, 'लगी एक-एक रुपए की शर्त। तू अगर मुझे दो रुपए दे दे तो मैं तुझे तीन रुपए दूँगी।'

राहुल मियाँ पड़ गए चक्कर में। सोचने लगे कि इसमें कुछ फ़ायदा भी है कि नहीं! तुम्हारा क्या ख्याल है?

(6)



इस चित्र में क्या बना है? पहचानो तो ज़रा।

(7)

इन्दौर से आष्टा जाने वाली बस में जितनी महिला सवारी थीं उनकी तुलना में पुरूष सवारियों की संख्या आधी थी। देवास में 10 आदमी और बस में चढ़े, जबकि 6 औरतें उतर गईं। अब महिला और पुरुष सवारियों की संख्या बराबर हो गई।

बताओ इन्दौर से रवाना होते समय बस में महिला और पुरुष सवारियों की अलग-अलग संख्या क्या थी?

(8)

इन्दौर से आष्टा जाने वाली बस में ही नम्रता अपने एक रिश्तेदार के साथ सफ़र कर रही थी। देवास से उसकी एक सहेली भी बस में चढ़ी। नम्रता ने अपने रिश्तेदार का परिचय कुछ यूँ कराया, 'ये मेरे फूफाजी के एक मात्र साले के लड़के हैं।'

नम्रता की सहेली तो आष्टा आने तक इसी उधेड़-बुन में रही कि वह नम्रता का क्या लगा? तुम भी सोचो।

वर्ग पहेली - 47

1		2	■	3	■	4	5	
	■	6			7	■		■
8	9	■	■	■	10	11		12
■	13		14		■		■	
15		■		■	16	■	17	
	■	18	■	19				■
20	21		22	■	■	■	23	24
■		■	25	26		27	■	
28			■		■	29		

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. एकदम धुर, लेकिन मीठा (3)
4. 'पागल नहीं जाता' में उगते सूरज का देश (3)
6. 'असमा चार बज गए, कोई खबर है?' (4)
8. शिरा (2)
10. 'तीतर की बत्तख' न बने इसका उपाय (4)
13. तस्वीर इन्हीं से बनवाना (4)
15. आन, बान और....? (2)
17. राह में है एक रंग (2)
19. अहमक बराबर में है यादगार स्थान (4)
20. चील अगर दानी हो जाए तो...(4)
23. इसमें से तेल निकालना सचमुच मुश्किल (2)
25. गुस्से का भाव (4)
28. बस राय चाहिए, सफ़र करते हुए यहाँ ठहरें (3)
29. नाइजीरिया की राजधानी (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. शोर न मचाओ, शिकारी के बैठने की जगह है (3)
2. गर्मियों में गन्ने का पिया जाता है...(2)
3. फरमा, सच्चा भी हो सकता है (2)
5. हाथी...घोड़ा....(3)
7. किसी काम को करने में व्यस्त, लीन (2)
9. एक सितारा, जो फ़िल्मों में डूब गया, लेकिन क्रिकेट में चमक रहा है (3)
11. क्रिकेट में दौड़-दौड़कर बनाते हैं (2)
12. बगुला (3)
14. बटन का जोड़ीदार और काम भी (2)
15. दुर्गा का एक रूप, मैहर में जिसका प्रसिद्ध मंदिर है (3)
16. दबदबा (2)
17. ज़िम्बाब्वे की राजधानी (3)
18. पूरब (2)
21. राह लम्बी में तरंग (3)
22. नानी को पलटो (2)
24. भीष्म साहनी का एक उपन्यास (3)
26. राष्ट्र (2)
27. कंगाली में आटा....(2)

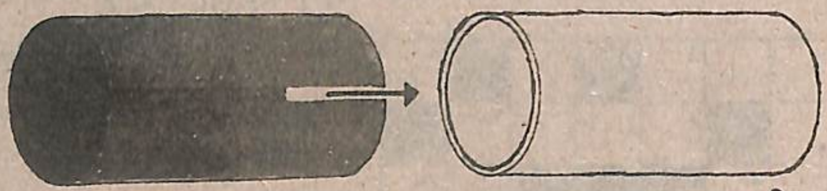
❑ मुक्ति नायक, ईशानगर, छतरपुर, म.प्र. द्वारा भेजी पहेली पर आधारित

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 47 का हल अगस्त, 95 अंक में देखें।

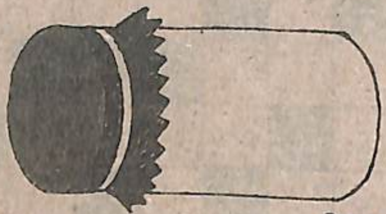
कैमरा

फोटो खींचने वाले कैमरे तो तुमने देखे ही होंगे। इन कैमरों की रचना जटिल होती है। लेकिन हम बिलकुल आसान और शुरुआती रूप का एक कैमरा बनाकर देख सकते हैं।

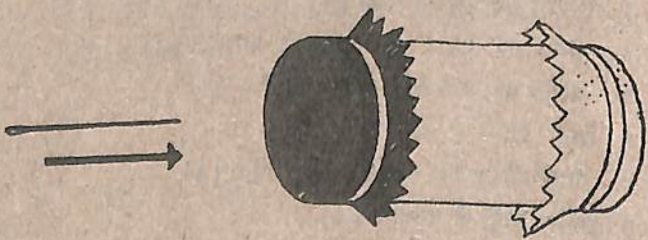
इसके लिए 8 से.मी. व्यास का लगभग 15 से.मी. लम्बा पाइप जिसके दोनों सिरे खुले हों (या टीन का डिब्बा जैसे पावडर का, या फिर अगरबत्ती का डिब्बा), काला काग़ज़ और ट्रेसिंग काग़ज़ की मुख्य रूप से ज़रूरत होगी। अगर पाइप नहीं मिलता है तो मोटी कार्डशीट से पाइप बनाना होगा। इसी तरह ट्रेंसिग पेपर न मिले तो हल्के रंग की पोलीथीन या सादे काग़ज़ पर तेल लगाकर उसे भी इस्तेमाल कर सकते हो। रबर बैंड, धागा, कैंची और गोंद की ज़रूरत भी होगी!


चित्र-1

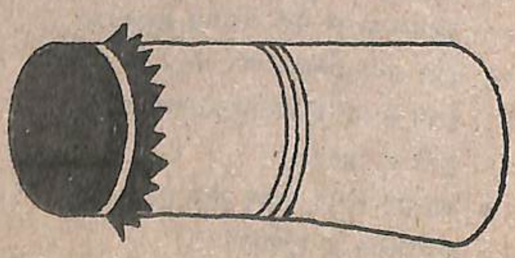
अगर पाइप नहीं है तो **चित्र-1** की तरह मोटी कार्डशीट का ऊपर दिए नाप का लम्बा पाइप बना लो। अब काले काग़ज़ का भी एक पाइप बनाओ, जो कार्डशीट से बने पाइप या टीन के डिब्बे से थोड़ा-सा छोटा हो। उसे बड़े पाइप के अन्दर फिट कर दो।


चित्र-2

अब एक चौकोर काला काग़ज़ लेकर पाइप के एक सिरे पर लगाकर रबरबैंड या धागे से बाँध दो (**चित्र-2**)। इसी तरह दूसरे सिरे पर ट्रेसिंग काग़ज़ (या पोलीथीन या तेल लगा काग़ज़ जो भी तुम्हारे पास हो) लगा दो। काले काग़ज़ वाले सिरे पर काग़ज़ के बीच में सुई से एक छेद कर लो (**चित्र-3**)।


चित्र-3

जिस तरफ ट्रेसिंग काग़ज़ लगाया है उसी तरफ एक मोटे काग़ज़ का पाइप बनाकर


चित्र-4

लगा लो। जिससे कि जब तुम यहाँ से देखो तो ट्रेसिंग काग़ज़ पर रोशनी न पड़े (**चित्र-4**)।



अब पाइप को किसी बल्ब की तरफ रखते हुए इस तरह पकड़ो कि छेद वाले काले काग़ज़ वाला सिरा बल्ब की ओर हो। दूसरे सिरे पर लगे पेपर पर देखो-क्या दिखा? बल्ब की एक बिन्दु बराबर रोशनी ट्रेसिंग पेपर पर पड़ेगी।

अब बाहर खुले में जाकर किसी ऐसी चीज़ (पेड़, मकान आदि) को इसमें देखो, जिस पर सूरज की रोशनी पड़ रही हो। क्या देखा?

इन बातों पर भी ध्यान दो कि कब तुम्हारे कैमरे पर बनने वाली छवि धुंधली दिखती है, कब साफ़ दिखती है। अगर छेद को थोड़ा बड़ा कर दें तो क्या होगा? अगर कई छेद बना दिए जाएँ तो क्या होगा? पता कर पाओ तो हमें भी लिखना। ❑ ❑

माथा पच्ची हल : अप्रैल, 95 अंक के

1. सिंहासनों का क्रम बाएँ से दाँए इस तरह होगा–



2. दोनों मोमबत्तियाँ तीन घण्टे से जल रही थीं।
3. नानू की पुरानी घड़ी अब से 15 मिनट बाद बारह बजाएगी।
4. ये अंग्रेज़ी के अक्षर C, D, E और उनके प्रतिबिम्ब हैं। अगली आकृति होगी- F और उसका प्रतिबिम्ब।
5. (b) चित्र

वर्ग पहेली 43 : हल

1 आ	लो	2 क	■	■	3 ब	4 र	दा	5 न
दि	■	6 न	द	7 न	■	श	■	मा
8 बा	च	क	■	ग	■	9 ना	10 सा	ज
सी	■	■	11 नी	र	12 स	■	ल	■
■	13 अ	च	ला	■	14 रो	म	न	■
■	ना	■	15 म	16 ह	द	■	■	17 क
18 स	र	19 ल	■	मी	■	20 च	प	ला
मा	■	लि	■	21 र	व	र	■	ध
22 स	म	त	ल	■	■	23 म	क	र

वर्ग पहेली - 43 का एक भी सर्वशुद्ध हल प्राप्त नहीं हुआ है। एक गलती वाले हल भेजने वालों के नाम इस प्रकार हैं : मनीषा पैंकरा, चन्दौरा, सरगुजा; जयश्री एवं वर्षाली डाफने, भैंसदेही; ऋचा एवं आशुतोष तिवारी, समता श्रीवास्तव, सदर; बैतूल। सभी मध्यप्रदेश। इन्हें चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी।



व्यंग्य चित्र : अमित कोलकर

मनुष्य महाबली कैसे बना!

पुरानी इमारत में पहली दरारें

हमारी भाषाओं में हमारी पुरानी सामुदायिक जीवन-प्रणाली के अवशेष अभी तक विद्यमान हैं, यद्यपि स्वयं इस प्रणाली का हमारी स्मृतियों में कुछ भी बाक़ी नहीं है।

बच्चे अपरिचितों को जब 'चाचा' या 'चाची' अथवा बुजुर्ग अजनबियों को जब 'नाना' या 'नानी' कहते हैं, तो यह उस समाज का अवशेष है, जिसमें कुल के सभी सदस्य सम्बंधित होते थे।

और हम कुछ आदमियों को सम्बोधित करते हुए अक़सर 'भाइयो' और ऐसी बच्ची को 'बेटी' कहते हैं, जो हमारी बेटी कतई नहीं होती।

दूसरी भाषाओं में भी प्राचीन अतीत के ये अवशेष कायम हैं। जर्मन भाषा में 'मेरे भांजे-भांजियाँ' के बजाय 'मेरी बहन के बच्चे' कहा जाता है। इसका कारण यह है कि कभी बहन के बच्चे कुल में ही रहते थे, जबकि भाई के बच्चे उसकी पत्नी के कुल में होते थे। बहन के बच्चे रिश्तेदार होते थे, वे 'भांजे और भांजियाँ' होते थे, जबकि भाई के बच्चे सम्बंधी नहीं होते थे, क्योंकि वे दूसरे कुल के होते थे।

अभी हाल - प्रिछली शताब्दी तक - अफ्रीका में एक अशांती जाति थी, जिसके राजा को 'नाने' कहा जाता था, जिसका मतलब है 'माँओं की माँ।'

मध्य एशिया में समरकंद में बादशाह को 'आफ़शीन' कहते थे, जिसका प्राचीनकाल में मतलब होता था 'घर की मालकिन'।

इस बात के कई और उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं कि लोगों के दिमाग़ों ने प्राचीन मातृसत्तात्मक समाज की (जिसमें माँ ही घर की मालकिन और शासिका होती थी), स्मृति को किस तरह क़ायम रखा है।

इसका मतलब यही हो सकता है कि अगर लोग इसे इतने लम्बे समय तक याद रखते हैं, तो कुल बहुत शक्तिशाली होना चाहिए था। लेकिन उसे नष्ट किसने किया?

अमरीका में यह जीवन-प्रणाली यूरोपीय विजेताओं के आगमन के साथ नष्ट हुई। और यूरोप में अमरीका के खोजे जाने के हज़ारों वर्ष पहले यह उसी प्रकार स्वयं ढह गई जिस प्रकार दीमकों का खाया मकान ढह जाता है।

इसकी शुरुआत तब हुई, जब पुरुषों ने कुल के अधिकाधिक आर्थिक मामलों को अपने हाथ में लेना शुरू कर दिया।

बिलकुल प्रारम्भ से ही धरती को जोतने का काम स्त्रियाँ करती थीं, जबकि पुरुष पशुओं के झुण्डों की देखभाल करते थे। जब तक झुण्ड बहुत छोटे ही थे, धरती की काश्त करने वालियों यानी स्त्रियों का काम सबसे महत्वपूर्ण था। गोश्त बहुत कम होता था और काम चलाने लायक काफ़ी दूध कभी नहीं होता था। औरतों द्वारा इकट्ठा किए और उपजाए अनाज के बिना खाने को कुछ न होता। कभी-कभी तो पूरा भोजन मुट्ठी भर सूखा अनाज या जौ की बनी एक चपाती का ही होता था। इसमें स्त्रियों द्वारा ही इकट्ठा किए जंगली शहद या बेरियों, को शामिल कर लिया जाता था। औरतें घर को चलाती थीं और इसलिए वे ही उस पर शासन भी करती थीं।

लेकिन हमेशा यही नहीं होता था। स्तेपी में धान्य घासें उगाना बहुत कठिन था। मैदानों की रसीली घासें अनाजों के लिए जगह छोड़ना नहीं चाहती थीं, वे अपनी मज़बूत जड़ों को धरती में गहरा घुसा देतीं। और जब कुदाल धरती को फाड़ती, तो उसे नरम मिट्टी नहीं, बल्कि ठोस घास की जड़ों युक्त भूमि, अछूती भूमि मिलती, जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल था।

और इसलिए तीन-तीन, चार-चार औरतें मिलकर कुदाल चलातीं। लेकिन इतने पर भी वे बस सतह को ही खुरच पाती थीं।

गहरी ज़मीन में न बोए गए बीजों को सूरज सुखा देता और पक्षी चुग लेते। कम ही हरे, नए अंकुर उग पाते। फिर खेत में सूखा अपना ही वरण करता। यह सुकुमार धान्य घासों को जला देता और बलवान, सह जाने वाली घासपात को ज़िंदा रहने देता।

जब कटाई का समय आता, तो स्त्रियाँ देखतीं कि काटने को कुछ भी नहीं हैं। ऊँचे घासपात में अनाज की बालियाँ उन्हें मुश्किल से ही मिल पातीं। स्तेपी की घासें हवा में शत्रु-सेना की पताकाओं की तरह झूमतीं, जो परास्त होने के बाद फिर लौटकर विजयी हुई हों।

अनाज की जगह घासपात! क्या इतनी परेशानी और कमरतोड़ काम किसी मतलब का था?

लेकिन आदमियों के लिए जो घास है, वही ढोरों के लिए दाना है। गायें और भेड़ें मैदान में चैन से रहती थीं। हर क़दम पर उनके लिए भर-पेट खाना तैयार था।

हर वर्ष के बीतने के साथ झुण्ड बड़े होते जाते थे। कुल के पुरुष अपनी पेटियों में कटार खोंसे उनके पीछे-पीछे लगे रहते थे। चरवाहे का सबसे अच्छा दोस्त, उसका कुत्ता, झुण्डों को इकट्ठा करने और उनका बिखरना रोकने में उसकी सहायता करता था। झुण्ड और



भी तेज़ी से बढ़ते गए और हर साल लोगों को ज़्यादा दूध, माँस और ऊन प्रदान करते रहे।

घर में अनाज काफ़ी न होता, मगर भेड़ के दूध से बने पनीर की भरमार होती और घर की पतीलियों में मेमने का शोरबा खुदबुदाता रहता। स्तेपी में पुरुष का काम यानी चरवाहे का काम ज़्यादा महत्वपूर्ण होने लगा। जल्दी ही उत्तरी वनों में भी पुरुष कुल के प्रमुख के रूप में अपना स्थान लेने लगा।

स्वीडन में एक हलवाहे का प्राचीन चट्टान-चित्र मिला है। यह गवाह हमें बताता है कि हलवाहा एक हल के पीछे जा रहा है और हल को बैलों की जोड़ी खींच रही है।

मानव-जाति के इतिहास में यह सम्भवतः पहला हल है। यह अभी तक बहुत कुछ कुदाल जैसा ही है। अकेला अन्तर यह है कि इसमें एक लम्बी बल्ली लगी हुई है और इसे आदमी नहीं, बैल खींच रहे हैं।

तो मनुष्य ने अपने पहले 'इंजन' की खोज कर ली! हल में जुता बैल निस्संदेह एक ज़िन्दा इन्जन है - हमारे फौलाद के ट्रैक्टर का ज़िन्दा पूर्वज। जब आदमी ने बैल की गर्दन पर जुआ रखा, तो उसने अपना बोझ जानवर पर डाल दिया। इस तरह जिन ढोरों ने पहले उसे सिर्फ़ माँस, दूध और चमड़ा दिया था, उन्होंने अब उसे अपनी शक्ति भी दे दी।



अपनी गर्दनों पर लकड़ी के जुए लिए मन्दगति किन्तु शक्तिशाली बैल हलों को खींचने लगे। ये हल मिट्टी में कुदालों की अपेक्षा ज़्यादा गहराई तक जाते थे। और उनके पीछे-पीछे खुदकर निकली मिट्टी एक काले फीते जैसी दिखाई देती थी।

पहले हलवाहे ने अपनी सारी शक्ति हल के हत्थे पर लगा दी थी। अब बैल ने उसका बोझ ले लिया। वह जुताई करता था और दाने को अलग करता था और उसके अनाज को ढोता था। शरद में बैलों को खलिहान पर ले जाया जाता और वे अनाज को अपने खुरों से अलग कर देते। इसके बाद उन्हें बेपहिया गाड़ी में जोत दिया जाता और वे अनाज के बोरों को खेतों से खींचकर घर ले आते।

पशु-पालन, कृषि की भरपाई करता था। चरवाहा हलवाहा भी हो गया। और इससे उसे घर में और ज़्यादा शक्ति प्राप्त हो गई।

काम में औरतों का भी पूरा हिस्सा था। वे कताई और बुवाई करती थीं, फसल काटती थीं और बच्चों को पालती-पोसती थीं। लेकिन वे अपनी पुरानी शक्ति और सम्मानित स्थान को गँवा चुकी थीं। चरागाह में और घर में पुरुषों की ही चलती थी।

अब औरतें पुरुषों पर किसी चीज़ से नाराज़ हो जाने पर इतना क्रोधित नहीं होती थीं, जितना कि पहले। और अब आदमी जवाब देने लगे थे - और केवल सफ़ाई देने के लिए ही नहीं। पहले सासों, मौसिया सासों और ननिया सासों के लिए किसी आदमी को घर से निकाल बाहर करना बहुत आसान था। अब वे उसकी परवाह करने लगीं, क्योंकि दूसरे कुल का यह अजनबी आदमी, जिसने उनके परिवार में शादी कर ली थी, उन सभी के लिए काम कर रहा था, वह कुल का पेट भरने में सहायता दे रहा था। अब वे खुद अपने पुरुषों को दूसरे कुलों को दे देने के लिए पहले की तरह तैयार न थीं।

कुलों पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए पुरुषों ने आपस में सैनिक समझौते कर लिए।

पहले, जब कोई आदमी मरता था, तो उसकी बहन के बच्चे उसके न्यायपूर्ण उत्तराधिकारी होते थे। अब पुरुषों ने इस कबीलाई कानून को बदलने की कोशिश की।

तुआरेग कबीले के अफ्रीकी खानाबदोशों में उत्तराधिकार को 'न्यायपूर्ण' भाग और 'अन्यायपूर्ण' भाग में बाँटा जाता था। विरासत का 'न्यायपूर्ण' भाग बहन के बच्चों को मिलता था और इसमें हर वह चीज़, जो मृतक ने अपने जीवनकाल में अपनी माँ से प्राप्त की थी और वह चीज़ शामिल होती थी, जो सामूहिक घर में काम करते समय संचित हुई थी। 'अन्यायपूर्ण' भाग में लड़ाई में जीता माल और व्यापार से संचित हर चीज़ सम्मिलित होती थी। यह भाग उसके अपने बच्चों को मिलता था।



मातृसत्तात्मक समाज हज़ारों वर्ष चला था। इसके बाद पुरानी जीवनप्रणाली में बलूत के पुराने पेड़ की तरह दरारें नज़र आने लगीं।

कुल के लोगों ने अधिकाधिक अवसरों पर पुराने तरीक़ों के खिलाफ जाना शुरू कर दिया। पहले पत्नी, पति को अपने परिवार में ले जाती थी। अब पति, पत्नी को अपने घर में लाता था।

चूँकि यह बात पुराने तरीक़ों के खिलाफ थी, इसलिए जो इस रिवाज़ को तोड़ता था, उसे अपराधी समझा जाता था।

कोई नौजवान किसी दूसरे कुल से पत्नी को सीधे-सीधे लेकर नहीं चला आ सकता था। उसे पत्नी को चुराना, उसका अपहरण करना पड़ता था।

आधी रात को नौजवान और उसके मर्द रिश्तेदार भालों और कटारों से लैस होकर उस नवयुवती के मकान के पास तक छिपकर जाते, जिसे लड़के के कुल ने उसकी पत्नी के रूप में चुना था।

भौंकते कुत्ते सारे ख़ानदान को जगा देते थे। दुलहिन का

श्वेतकेशी नाना भी और बिना दाढ़ी-मूँछवाले भाई भी, सभी लोग अपने हथियारों की तरफ लपकते, लड़ाई में उलझे पुरुषों की ज़बरदस्त चिल्लाहटें औरतों के क्रंदन को डुबा देतीं। आख़िर, दूल्हा अपने कुलवालों की आड़ में अपनी ज़िन्दा लूट - अपनी दुलहिन -को लिए-लिए वापस आ जाता।

अनेक वर्ष बीत गए। कालान्तर में कबीलाई पुराने कानून का यह उल्लंघन एक नया कबीलाई रिवाज़ बन गया। तब दूल्हा और दुलहिन के रिश्तेदारों में 'लड़ाई' एक संस्कार बन गई।

रक्तपात की जगह भेंटों और मुक्ति-मूल्य ने ले ली। दुलहिन की रोती माँ, बहनें और सहेलियाँ भी विवाह-संस्कार का एक अंग बन गईं, जिसके अन्त में दावत होती थी।

अभी तक ऐसे लोग हैं, जिन्हें वे प्राचीन शोकपूर्ण गीत याद हैं, जिनमें एक अजनबी कुल और अजनबी घर में आनेवाली युवा वधू विलाप करती है।

और उसका हाल था भी ऐसा ही। अनजान घर में युवती पूर्णतः अपने पति की दया पर आश्रित होती। कोई ऐसा न था, जिसके आगे वह अपना दुखड़ा रो पाती, क्योंकि उसकी सास और ससुर दोनों और उसके पति के सभी सम्बन्धी सदा उसके पति का ही पक्ष लेते।

जब कोई आदमी घर में एक जवान दुलहिन को लेकर आता, तो यह लड़की परिवार में एक और काम करनेवाली की हैसियत से आती थी और हर कोई इस बात का ध्यान रखता था कि वह क्षण भर को भी ख़ाली न बैठे और अपने थोड़े से हिस्से से ज़रा भी ज़्यादा न खा ले।

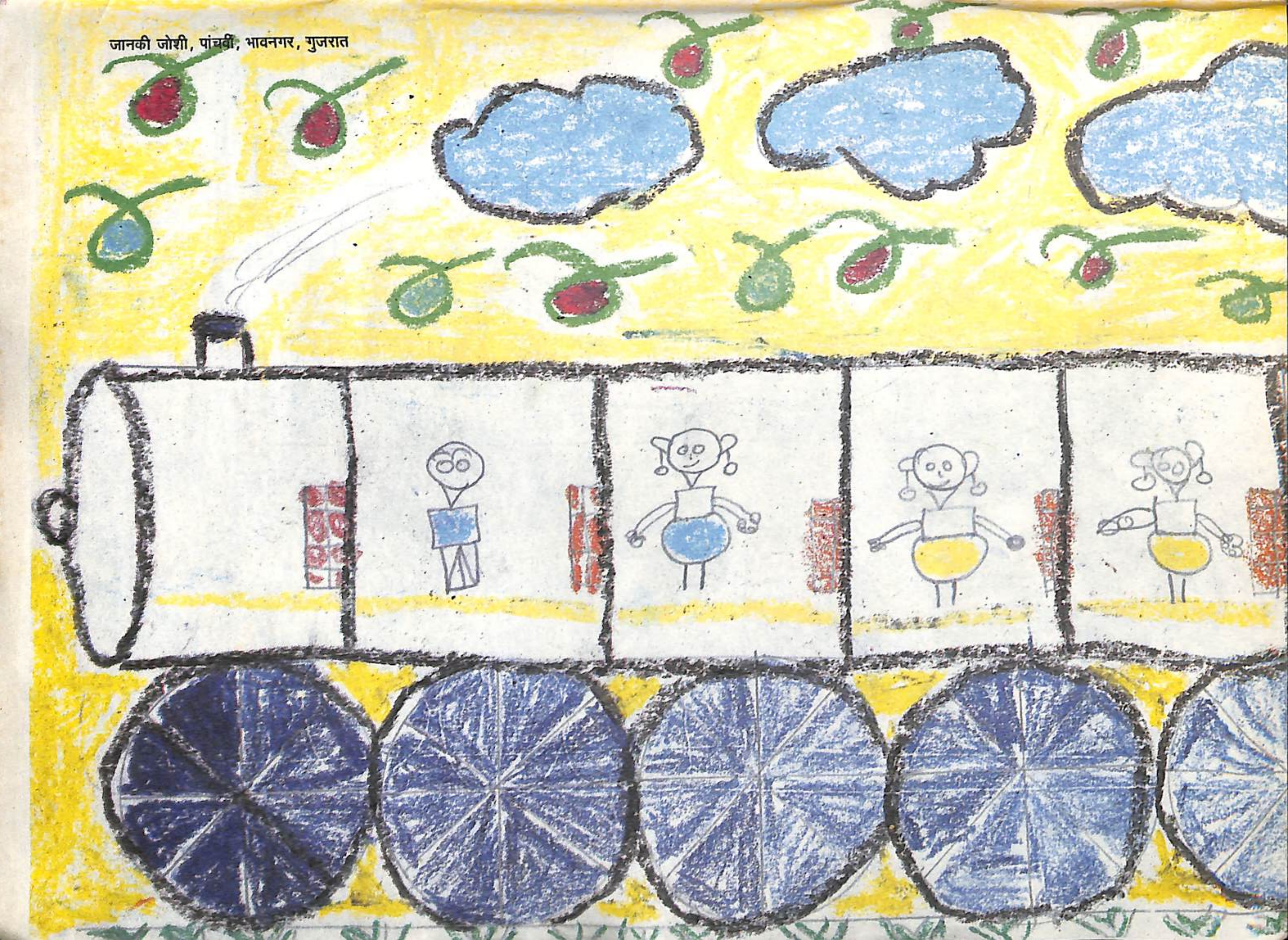
परिवार, जिसमें हर बात में माता की ही चलती थी, हर बात में पिता की ही चलनेवाला परिवार बन गया।

अब बच्चे अपनी माँ के परिवार के साथ नहीं रहते थे, वे अपने पिता के परिवार के साथ रहने लगे। सम्बंध अब माँ के परिवार से नहीं, पिता के परिवार से निर्धारित किया जाता था।

(अगले अंक में जारी)

'मनुष्य महाबली कैसे बना से' साभार।
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

इस धारावाहिक का यह हिस्सा खासतौर पर परिवार के ढाँचे के बारे में है। तुम अपने परिवार और आसपास के परिवारों में किस तरह की व्यवस्था देखते हो? आदिम समय के परिवार की तरह या बदलते हुए परिवार का कोई रूप। हमें लिखना,लेख के रूप में या चाहो तो कहानी/कविता के रूप में।



जानकी जोशी, पांचवीं, भावनगर, गुजरात

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/ 95



नवीन शिंगणे, मांझापारा कांकेर, बस्तर, (म.प्र.)

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना